आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2020-2022

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जनसंवाद का पाक्षिक

वर्ष 5 | अंक 18 | उदयपुर गुरूवार 01 अक्टूबर 2020 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

माटी के खिलौने जैसा जीवन

पुरुष और प्रकृति का सामंजस्य बना रहे। उसमें ज्यों-ज्यों घटत-बढ़त होती है त्यों-त्यों जीवन का सन्तुलन बिगड़ता चला जाता है। आज यही हो रहा है। इसलिए नदी के दो किनारे भी भिन्न किस्म के हुए लगते हैं। यह असन्तुलन सुख और दुख दोनों को बढ़ावा देता हुआ दिखाई दे रहा है। इसलिए अधिक सुखी भी अधिक दुखी बना हुआ है। इसके लिए प्राकृतिक और मानवीय सन्तुलन जरूरी है। युवक चाहे तो वह पगडंडी को राजमार्ग ही नहीं बनाये अपितु नई पगडंडी का निर्माण कर सशक्त लोकमार्ग का ही निर्माण कर सकता है।

जीवन के संदर्भ में प्राय: यह बात कही जाती है कि वह माटी के खिलौने जैसा क्षणभंगुर है। यह उपमा इस अर्थ में है कि जीवन का कोई भरोसा नहीं है। उम्र निश्चित नहीं है। वह कभी भी अपनी स्वांस बन्द कर देगी। पता ही नहीं चलेगा इसलिए किसी भी क्षण का प्रमाद न करें और उसे निरर्थक नहीं जाने दें अर्थात् सार्थक जीवन जीयें।

सार्थक जीवन की दिशा और दशा क्या है? लयबद्ध जीना कैसे हो? बहुत से लोग हैं जो दिशाहीन जीवन जी रहे हैं। बहुत से लोग हैं जो जैसा जीना चाहें वैसा नहीं जी पाते हैं। बहुत से लोग हैं जो सोच के मुताबिक जीवन नहीं जी सके। बहुत से लोगों को इसका पछतावा भी नहीं तो कुछ हैं जिन्हें सख्त अफसोस रहता है कि वे जीवन में कुछ नहीं कर पाये तो ऐसे भी मिलेंगे जिन्हें आशा से अधिक उपलब्धि मिली।

ऐसे लोग भी हैं जो यह मानते हैं कि मनुष्य के हाथ में कुछ नहीं है। कोई शक्ति है जो सृष्टि का संचालन करती है। इसलिए जो कुछ होता है वह मनुष्य के वश में नहीं। ऐसे द्वंद्व भाव चलते रहते हैं। बचपन में तो बालक का जीवन निर्माण उसके हाथ में नहीं होता। माता-पिता-अभिभावक जैसा चाहते हैं, वही होता है। माटी का लौंदा जिस रूप में आकृति पाता है वही रूप निखर आता है पर माटी में और जीवन में तो फर्क है ही।

बालक का वश चले या ना चले, उसकी निजी सोच और समझ बुद्धि भी तो उसके स्वभाव पर असर करती है। वातावरण, परिस्थिति और संगति का भी कहीं न कहीं प्रभाव दिखाई देता है। यह भी कि पूर्वजन्म भी अपनी छाप-छाया देता है। इन सारे संदर्भों में कोई कैसे अपने जीवन को ठीक से नियंत्रित कर पाता है, यह पक्ष भी कम महत्त्व का नहीं है।

कई उतार-चढ़ाव आते हैं जीवन में। मौसम के मिजाज की तरह जीवन का मिजाज बदलता रहता है। उसी के अनुसार प्रकृति में परिवर्तन हुआ मिलता है तब लगता है, स्थिर कुछ भी नहीं है पर तब भी जीवन को माटी की महक देनी होती है। सारपूर्ण अर्थवत्ता के साथ बेमिसाल कुछ होना पड़ता है तब जाकर उसकी सार्थकता, वर्चस्व कायम होता है।

एक अर्थ में स्वयं को ही अपने 'स्व' का निर्धारण करना होता है। स्वयं को ही अपने 'स्व' को पहचानना होता है। इसके लिए चित्त की दृढ़ता और तदनुसार कर्मशील रहते हुए कार्य का निष्पादन जरूरी होता है। यह पहचान भी बनानी होगी कि जीवन में पल-पल जो बाधक तत्व हैं वे सदैव अवरोधक बन हमारे सार्थक स्वप्नों को खंडित करने का उपक्रम लिए रहते हैं। उनके बीच रहते हमें हमारी पगडंडी स्वयं निर्मित कर उनको सबक देना भी है कि हमारा संकल्प ही हमारी सुदृढ़ मंजिल है जिसे कोई चाहकर भी ध्वस्त नहीं कर सकता।

मैंने सदैव संघर्ष में सुख देखा इसलिए संघर्ष को जीवन का अनिवार्य पक्ष माना। संघर्ष कहां नहीं है? पूरी प्रकृति में ही घर्ष-संघर्ष है इसलिए हर पल बाधाएं आ खड़ी होती हैं पर उन्हें पहचानने की और उन पर विजय पाने की सुध भी वे ही देती हैं। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने लिखा- 'यदि बाधाएं हुई हमें तो उन बाधाओं के ही साथ / जिससे बाधा बोध न हो वह सहनशक्ति भी आई हाथ।'

जो परिस्थिति हमारी है उसमें सर्वप्रकारेण सुखी और संतोषी बने रहने की प्रवृत्ति भी सकारात्मक जीवन जीने की सफल सीढ़ी है। मैं जब अपने को निराश और बेडोल पाता हूं तब भी मुझे गुप्तजी की 'पंचवटी' की वे पंक्तियां मेरा मार्ग प्रशस्त कर हौंसला दिलाती हैं, आशा का संचार करती हैं जब लक्ष्मण को अपनी संगिनी उर्मिला की याद हो आती है और पंचवटी के उस नीरव रजनी के वातावरण में संतोषी सदा सुखी बना लक्ष्मण कह उठता है-

बेचारी उर्मिला हमारे लिए व्यर्थ रोती होगी।
क्या जानें, हम जंगल में हैं उससे इतने सुख भोगी।।
एक राज्य के लिए जगत ने कितना महामूल्य रखा!
हमको तो मानो वन में ही है विश्वानुकूल रखा।।

मैंने दशामाता की सौ से अधिक कहानियां सुनीं और एकत्र कीं। होली के बाद दस दिन तक महिलाएं गृहदशा ठीक रहे, परिवार में सुख समृद्धि बनी रहे इसलिए दशा देवी का अनुष्ठान करती हैं। हर कहानी में अच्छी करनी का अच्छा तथा बुरी करनी का बुरा फल दिया मिलता है। कहानी के अन्त में यह भावना रहती है कि सबको अच्छा फल मिले, किसी का बुरा नहीं हो।

यह सबके प्रति सकारात्मक समतावादी भावना का सुखद विस्तारा है। आज हमारी सोच नितान्त व्यक्तिवादी स्वार्थमूलक एकांगी हो गई है। जब सबको सुख, शान्ति और समृद्धि मिलेगी तो हम भी उसमें सम्मिलित हैं ही, ऐसी भावना ही समरसता की भावना है। यह सोच और जीवन-शक्ति हर युवा मन की होनी चाहिये। अन्ततोगत्वा परमार्थकारी सोच, दृष्टि और समझ के सरोकार ही फलित होते हैं। पूरी प्रकृति इसका उदाहरण है तो पुरुष नकारा क्यों सिद्ध हो रहा है?

पुरुष और प्रकृति का सामंजस्य बना रहे, उसमें ज्यों-ज्यों घटत-बढ़त होती है त्यों-त्यों जीवन का सन्तुलन बिगड़ता चला जाता है। आज यही हो रहा है। इसलिए नदी के दो किनारे भी भिन्न किस्म के हुए लगते हैं। यह असन्तुलन सुख और दुख दोनों को बढ़ावा देता हुआ दिखाई दे रहा है। इसलिए अधिक सुखी भी अधिक दुखी बना हुआ है। इसके लिए प्राकृतिक और मानवीय सन्तुलन जरूरी है। प्रकृति के प्राणवान सुकवि सुमित्रानंदन पंत को इसीलिए लिखना पड़ा-

जग पीड़ित रे अति सुख से
जग पीड़ित रे अति दु:ख से
मानव जग में बंट जाये
सुख दु:ख से औ, दु:ख सुख से।

यह राह दिखाते हैं कि सन्त महात्मा साधु वैरागी तपसी जो संसार में रहकर भी अपने को असंसारी बनाये जग के कल्याण के लिए साधनाशील बने हुए हैं। मीरां का तो पूरा जीवन ही संघर्ष और कठोर साधना का जीवन रहा। जगत तो जगत है। वह पहुंचे हुए सन्तों तथा साधकों को नहीं जान पाता इसलिए उन्हें हर समय प्रताड़ित किये रहता है तब भी मीरां सन्त शिरोमणि और रैदास, कबीर फक्कड़ बने रहते हैं।

तुलसी ने तो द्वारिका में भी कृष्ण की बजाय राम नाम की रट लगानी शुरू कर दी और डंके की चोट पर कहा भी कि मैं कृष्ण के दर्शन भी राम के रूप में ही करना चाहूंगा। अन्त में उनकी यह इच्छा पूरी हुई। द्वारिका के मन्दिर में कृष्ण ने राम के जटाजूट रूप में दर्शन दिये। मूर्ति के सामने जहां तुलसी ने बैठकर दर्शन किये वह स्थान आज 'तुलसी की बैठणी' के रूप में जाना जाता है। ऐसी तन्मयता, लगन और समर्पण हो तो जीवन की सार्थकता उलींचे भरती है तब 'क्षणभंगुर जीवन' न जाने कितने युगों तक विस्तार नापता चलता रहता है।

दुर्भाग्य से आज का समय आचरण और व्यवहार का नहीं रहा। कथन, संभाषण और निरा संवाद का हो गया है इसलिए विश्वसनीय भी नहीं है। पुरुष और प्रकृति का सन्तुलन भी नहीं रहा इसलिए मनुष्य का अविश्वासी स्वयं मनुष्य बना हुआ है।

वृहदारण्यक में पुरुष द्वारा परमात्मा से बड़ी ही सुन्दर प्रार्थना की गई है- 'हवा मेरे लिए अनुकूल बने। नदियां मुझे मीठा पानी दें। सारी वनस्पतियां मेरे लिए सुखद हों। रात कल्याणकारी और सुबह स्वास्थ्यप्रद तथा संध्या मनरंजक हो। पिता तुल्य आकाश मुझे आशिष दे। वृक्ष मीठे फल दे। सूरज सर्वतोभावेन कल्याणदायक और गायें मीठा दुग्धपान कराने वाली हों।'

युवक अनेक शक्ति का पुंज होता है। वह अपनी शक्ति क्षमता और सीमा को पहचाने। अनन्त संभावनाएं मुंह बायें खड़ी हैं। अनन्त रास्ते और लाभ लोभ के ललित लम्हे हैं। लक्ष्य का निर्धारण उसी को करना है। अपनी राह का वह अकेला पथिक हो। वह चाहे तो पगडंडी को राजमार्ग ही नहीं बनाये अपितु नई पगडंडी का निर्माण कर सशक्त लोकमार्ग का ही निर्माण कर सकता है।

- डॉ. भा.

कोरोना : पास-दूर का मरना-जीना

-डॉ. अनिरूद्ध पुरोहित-

कोरोना के बढ़ते, विवशता के रहते
अब दरवाजे खुल गए हैं
सारे लॉक्स ओपन अप हैं
आप छः महीनों की ट्रेनिंग के बाद
मैदान में उतर चुके हैं
अब खास लड़ाई लड़नी है।
जहां दूसरों की गाड़ी की टक्कर से हेलमेट पहन बचना है
वहीं दूसरों के मुंह और नाक से भी बचना है
उनकी खांसी हंसी और बोली से निकली हवा से बचना है
मात्र दो मीटर की दूरी और
चेहरे पर मास्क पहनकर
हवादार जगह पर काम करना है।
कोरोना से मौत और जीवन के बीच मात्र दो मीटर की दूरी है
कितना सरल है मरना और कितना सरल है जी सकना
दूर रहे तो जी गए
पास गए तो मर गए
जीवन या मौत के परिणाम के लिए सरल नियमों के पालन की परीक्षा है
मौत और जीवन के बीच मात्र दो मीटर की दूरी है
पास गए तो मर गए
दूर रहे तो जी गए।।

(मूलत: उदयपुर निवासी न्यूरोसर्जन डॉ. पुरोहित वर्तमान में हैदराबाद स्थित निम्स हॉस्पिटल में तंत्रिकीय शल्य चिकित्सा विभाग के अध्यक्ष हैं।)

श्राद्धपक्षीय संझ्या मण्डन

शब्द रंजन के गत 15 सितम्बर के अंक में डॉ. कहानी भानावत का संझ्या सम्बन्धी आलेख प्रकाशित किया गया था। एक समय था जब मेवाड़ के सम्पूर्ण क्षेत्र के पूरे श्राद्धपक्ष में सांझी का मण्डन देखने को मिलता था पर अब वह परम्परा लुप्त हुई लग रही है तथापि कहीं-कहीं अन्तिम दिनों में कोट का अस्तित्व अवश्य मिलता है। उदयपुर के जड़ियों की ओल में एक बालिका संझ्या कोट बनाती हुई देखी गई।

इसी प्रकार जगदीश चौक से लगे कलश मार्ग स्थित गोरधननाथजी के मन्दिर में राजेश वैष्णव द्वारा निर्मित जल के ऊपर झिलमिलाती दान लीला की मनहर झांकी। **-फोटो : राजेन्द्र हिलोरिया**

कृष्णकुमार सौरभ भारती अलविदा

उदयपुर (का. सं.)। पत्रकार, गीतकार कृष्णकुमार सौरभ भारती का 90 वर्ष की उम्र में 21 सितम्बर को निधन हो गया। वे यहां जयपुर से प्रकाशित अधिकार दैनिक के प्रतिनिधि स्वामी थे। अपने समय में उन्होंने यहां साहित्यिक एवं पत्रकारिता के क्षेत्र में बड़ी हलचल दी। युवाओं को काव्यसृजन की प्रेरणा दी। अनेक कवि सम्मेलनों, काव्य-गोष्ठियों तथा आकाशवाणी कार्यक्रमों में उनकी जीवन्त भागीदारी रही।

उनके निधन पर डॉ. महेन्द्र भानावत, डॉ. देव कोठारी, डॉ. लक्ष्मीनारायण नंदवाना, डॉ. पुरुषोत्तम छंगाणी, कमर मेवाड़ी, प्रो. देवकर्णसिंह राठौड़, डॉ. ज्योतिपुंज तथा किशन दाधीच ने शोक व्यक्त करते बताया कि वे 'भाईजी' के नाम से अपनी पहचान बनाये बड़े रसिक तथा मृदुभाषी ही बने रहे।

समाजसेवी सुन्दरलाल नहीं रहे

उदयपुर (का. सं.)। मूलत: कानोड़ निवासी प्रसिद्ध समाजसेवी सुन्दरलाल जैन (मेहरी) का 23 सितम्बर को असामयिक निधन हो गया। डॉ. महेन्द्र भानावत के अनुसार पिछले छह दशकों से उन्होंने उदयपुर को अपना कार्य क्षेत्र बनाते हुए यहां के उद्योग जगत तथा समाज-शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय पहचान बनाई। कानोड़ मित्र मण्डल के स्थापनाकाल से ही उनकी बड़ी सक्रिय भागीदारी तथा सहयोगधर्मिता रही। अपनी मिलनसारिता तथा मृदुल व्यवहार से वे सबके अजीज बने रहे। मेहरी परिवार कानोड़ में भी सामाजिक तथा धार्मिक गतिविधियों में नामचीन रहा।

डॉ. तुक्तक भानावत ने बताया कि शब्द रंजन कार्यालय में जैन साहब को युवा उद्योगी मुकेश जैन, मुकेश हिंगड़, अजय सरूपरिया, राकेश सुहालका, दिनेश सुहालका, शैलेष नागदा, धर्मेंद्र नागोरी, विनोद जैन, लोकेश नाहर, हिम्मतसिंह चौहान, सुमित गोयल, राजकुमार जोशी, दिशांत सागवाड़िया आदि ने श्रद्धांजलि व्यक्त करते हुए उनको उद्योग जगत की अपूरणीय क्षति बताया। श्री जैन अपने पीछे धर्मपत्नी चन्द्रकला, युवा उद्योगी सुपुत्र राजेन्द्र-कविता तथा दिलीप-पल्लवी सहित प्रभा-अनिल जैन, सुधा-जयन्त पटवा पुत्रियों का भरापूरा परिवार छोड़ गये हैं।

कैद के भय से मुक्ति दिलाने वाली दिवाक माता

-मदन वैष्णव-

प्रतापगढ़-उदयपुर मार्ग पर देवगढ़ से आगे राणपुर गांव के निकट, दक्षिण की ओर घाटियों वाले घने वन में देवाक माता (दिवाक माता) का मन्दिर आदिवासियों की आस्था का केंद्र है। मन्दिर के बाहर असंख्य त्रिशूल गड़े हुए हैं। इनके ऊपर कई हथकड़ियां टंगी हुई हैं। कुछ तो इतनी पुरानी हैं कि जंग लगकर टूट गई हैं।

हथकड़ियाँ और बेड़ियां देसी तौर-तरीके से बनी हैं, जो रियासतकाल की हैं। कहते हैं, रियासतकाल में, परता राणा नाम का डाकू हथकड़ियाँ पहने जब मन्दिर के द्वार पर आया तो हथकड़ियाँ अपने आप खुल गईं। परता राणा को मैंने लगभग 55 साल पहले देखा है। वह साढ़े छह फीट ऊँचा हट्टा-कट्टा आदिवासी था जिसकी कमर में तलवार, छुर्री और कंधे पर बंदूक लटकी रहती थी। उसकी आंखें बड़ी-बड़ी और लाल थीं। लोगों से कहते सुना कि वह सेठों को लूटता था और लूट का कुछ धन गरीबों में बांटता था।

दिवाक माता को कारागृह के भय से मुक्ति देने वाली देवी तो

माना ही जाता है संतानदात्री देवी भी माना जाता है। देवी कुलदीपक (संतान) देकर कुल में उजाला भरती है। माता को लोग संतान की कामना पूरी होने पर पालने चढ़ाते हैं। यहां चढ़ाए गए अनगिनत पालने बंधे दिखाई देते हैं। कुछ तो सैंकड़ों साल पुराने हैं। भोपाजी भक्तों की पीठ जोरों से ठोक बजाकर उनकी तकलीफों को दूर करते हैं। दिवाक माता का स्थान बहुत पुराना है। पत्थरों की पिण्डियों पर सिन्दूर लगाकर पूजे जाने की यहां प्राचीन परंपरा रही है। इसी कारण यहां पिण्डी वाली पुरानी मूर्तियां अधिक संख्या में हैं। सभी पिण्डियां पूर्वाभिमुख हैं। लगभग सौ साल पहले यहां संगमरमर की कुछ सुन्दर मूर्तियों की स्थापना कर दी गईं। मंदिर का भी नवीनीकरण किया गया है। नई दक्षिणाभिमुख मूर्तियां भी दर्शनीय हैं।

कारावास भुगत रहे कैदियों के परिवार जनों को अक्सर माता की शरण में आता देखा गया है। कोर्ट-केसेज़ वाले आरोपी के परिवारजन भी यहां मन्नत लेने आते हैं। वे लोग भी आते हैं जो किसी भी अपराध में लिप्त नहीं होकर भी अकारण कैद हो जाने के भय वाले होते हैं। माता का स्थान हिल-स्टेशन जैसा है। पहाड़ों की सैर जैसा आनंद आता है। यहां पर रात्रिविश्राम की कोई सुविधा नहीं है। भोजनालय-रेस्त्रां भी नहीं होने और हिंसक पशुओं के डर के चलते शाम ढलने के पहले ही लौटना होता है।

अपनी संस्कृति अपना देश

गुरुजी के नाम राणाजी का स्कूल

उदयपुर में पहली पाठशाला खोलने वाला विदेशी पोलिटिकल एजेंट एफ डब्ल्यू ईडन था। आग्रह तो महाराणा का था ही। ईडन ने झटपट, फटाफट इसे मूर्तरूप दिया और शंभुरत्न पाठशाला प्रांरभ करवाई। यह पाठशाला जगदीश मन्दिर के पीछोकड़े विद्यालय भवन में शुरू की गई। आज भी वहां बालिकाओं का विद्यालय चल रहा है। ईडन का आग्रह रहा कि महाराणा शंभूसिंह के नाम से पाठशाला का नामकरण हो परन्तु महाराणा चाहते थे कि उनके गुरु पंडित रत्नेश्वर का नाम भी जुड़े फलस्वरूप दोनों के संयुक्त नाम से शंभूरत्न पाठशाला का शुभारम्भ हुआ। यह शुभ दिन 14 जनवरी 1863 का था।

शंभूरत्न पाठशाला में शुरू-शुरू में कोई पाठयक्रम तय नहीं हुआ था। व्यावहारिक विषय ही केन्द्र में रखे गए जिनमें भाषा व गणित मुख्य था। अक्षर ज्ञान की पढ़ाई के साथ-साथ सिद्धोवरणो और पहाड़े पढ़ाए जाते थे। पाटी-बरतणा की पढ़ाई ज्यादा थी। घोटत विद्या ही अधिक चलती थी। मुंह जुबानी याद के लिए रटने की परम्परा थी। आखिरी घंटा पहाड़ों के सामूहिक रटन का रहता था। जोर-जोर से गिनती बोली जाती। जो जितना दहाड़ा, उतना जाए पहाड़ा। सवाया, ड्योढ़ा, ढैया, ढूंचा जैसे पहाड़ों की गिनती से स्कूल ही नहीं गूंजता, बाहर का गली- मोहल्ला भी गूंज उठता था।

आजादी के बाद भी पढ़ाई की यही परिपाटी रही। यहां से निकले कई छात्रों को बनारस भी भेजा गया जिन्होंने पाणिनी, कात्यायनी, पतंजलि के कोशिका आदि व्याकरणों के आधार पर अपनी विद्वता को बढ़ाया। बाद में जब काशी में विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए महामना मालवीयजी आगे हुए तो उन्होंने उदयपुर के महाराणा से भी सहयोग का आग्रह किया। वे स्वयं यहां आए और महाराणा फतहसिंह ने उनका यथेष्ट सहयोग किया।

शंभूरत्न पाठशाला में पढ़ाई अच्छी हो, यहां पढ़े-लिखे लड़के रत्न बने, इसके लिए समय-समय पर महाराणा खोजखबर करवाते। तब 225 छात्र थे जिन्हें माड़साब (मास्टर साहब) पढ़ाते। सालाना बजट 825 रूपये का था। सन् 1884 ई. में यह पाठशाला हाईस्कूल बनी। इस समय कुल 200 छात्र अध्ययन कर रहे थे। वर्ष 1985 में यहां मिडिल बोर्ड की परीक्षा प्रारम्भ हुई जिसमें तीन छात्र बैठे। पांच साल बाद पहली बार पांच छात्रों ने हाई स्कूल की परीक्षा दी। यह जानकारी पं. श्यामसुन्दर व्यास द्वारा प्राप्त हुई।

टांकी का घी

तब ठिकाने की पहचान वहां के ठाकुर साहब और ठाकुर साहब की पहचान वहां के घोड़े थे जो युद्धभूमि में वैरियों के दांत खट्टे कर मालिक की मूछें ऊंची रखते थे। रजनी, प्रभा और नंदा जैसी घोड़ियां पूरे चौखले की शान थी। घोड़ों में कन्हैया पवनवेग सी स्फूर्ति एवं चुस्ती लिए था। एक पुरूषोत्तम नाम का घोड़ा था यथा नाम जो स्वामी को लड़ाता जैसे खुद लड़ता।

यह ठिकाना था पदराड़ा का। गोगुन्दा से आगे देवस्थान की मादड़ी के पास वाला गांव। एकबार पुरूषोत्तम की पीठ पर टांकी लग गई। बहुतेरा इलाज कराया गया। बहुतेरे समझेबुझे बुलाए गए। जिसका इलाज लग जाए, वही इलाज। ठीक होना हो तो धूल की चिमटी से ही चंगा हो जाय और वही स्वर्णभस्म का काम करदे। पुरूषोत्तम की टांकी देखकर एक बूढ़े समझू ने कहा कि इस पर घी को थोड़ा नवाया (गर्म) कर सेक किया जाए। जड़मूल से बीमारी जाती रहेगी। शर्त यह थी कि घी एकदम शुद्ध हो। पदराड़ा में शुद्ध घी की कहां कमी थी। घर-घर दोजा (दूधारू पशु) था सो गांव वालों ने ओसरा बांध दिया कि बारी-बारी से प्रत्येक घर से ठिकाने में घी पहुंचाया जाय।

इससे पुरूषोत्तम तो ठीक हो गया मगर टांकी का घी ठिकाने में निरन्तर पहुंचता रहा। उसका ओसरा कभी नहीं टूटा। अब न पुरूषोत्तम रहा और न वे ठाकुर तथा न वह ठिकाना ही रहा मगर गांव वालों की अपने स्वामी के प्रति अगाध भक्ति, समर्पण या कर्तव्यभाव कि आज भी वह परम्परा जारी है।

जैन संत गणेशमुनि शास्त्री ने बताया कि विक्रम सवंत् 2023 में जब उनका चातुर्मास पदराड़ा था तब वहां के ठाकुर ने बातों ही बातों में इस घटना का जिक्र किया। जिनेंद्र मुनि ने कहा कि लोकजीवनी संस्कृति की ऐसी छवियां इतिहास की असल पत्रावलियां होती हैं मगर इतिहासकारों का ध्यान कभी नहीं गया।

- डॉ. भा.

स्मृतियों के शिखर (108) : डॉ. महेन्द्र भानावत

जैनेन्द्रजी की दृष्टि में 'पति-पत्नी प्रेमी-प्रेयसी' चारों ही अनिवार्य

किसी बात को घूमा फिराकर बड़ी चतुराई से उसकी प्रस्तुति देने में जैनेन्द्रजी सिद्ध कलाकार हैं। जनार्दन और जैनेन्द्र साहित्य की दो बड़ी हस्तियां हैं जिन्हें पाकर अपने जीवन के अन्तिम दिनों में प्रेमचन्द तक निश्चिंत हो गये थे। जैनेन्द्रजी की दृष्टि में- ''प्रेमचन्दजी ने सदैव विशिष्ट बनने से इन्कार किया। सामान्य में भी वे अति सामान्य थे। उन्होंने पाठक को चमत्कृत करने, अभिभूत करने या कि प्रभावित करने की दृष्टि से कुछ नहीं लिखा। प्रेमचन्द को उनकी सादगी, सज्जनता, सहृदयता और सामान्य बने रहने के व्रत ही ने महान बना दिया। प्रेम एक ऐसी विवशता है कि उस ओर आदमी खींचता है। यह तो जीवन की कशिश है जो समाप्त नहीं होती। प्रेम की सार्थकता पत्नी से नहीं, प्रेयसी से होती है जिसके प्रति आदमी समर्पित हो जाना चाहता है। मेरी दृष्टि में पति, पत्नी, प्रेमी और प्रेयसी चारों ही अनिवार्य हैं। यदि हम चारों को मान लेते हैं तो फिर कोई टूटन नहीं रहेगी। हम लाख छिपाने की कोशिश करें, प्रेम छिप नहीं सकता। प्रेम की महिमा ही यह है कि उससे संयम हारता है। जो अनिवार्य है यदि स्त्री उसे स्वीकार नहीं करेगी तो उसका फल भोगेगी जो भोग रही है।''

प्रख्यात साहित्यकार जैनेन्द्रजी को पहले भी कई बार देखा, सुना पर कभी मिलने की चाह ही नहीं रही। उदयपुर विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग द्वारा आयोजित व्याख्यानमाला में तो कभी आचार्यश्री तुलसी के सान्निध्य में; कभी राजस्थान की साहित्य अकादमी के समारोह में जैनेन्द्रजी को जब-तब सुन चुका था।

कई बार तो लगा कि एक ही बात को वे कई तरह से ऐसी टूमते हैं जैसे महिलाएं पापड़ बनाने से पहले लोए बनाने के लिए बेसन के आटे को पानी का परस दे टूम-टूम कर वेले बनाती हैं। किसी बात को घूमा फिराकर बड़ी चतुराई से उसकी प्रस्तुति देने में जैनेन्द्रजी सिद्ध कलाकार हैं और यह भी कि जब कोई उनकी बात को पकड़ता हुआ उसका अर्थ-विश्लेषण करने बैठेगा तब तक वे एक बात और आगे बढ़ाते मिलेंगे। इस तरह वे एक बात को आगे से आगे चलाते रहेंगे। कहीं किनारा नहीं आने देंगे इसीलिए मैं जैनेन्द्रजी के व्याख्यान का कभी रसिक श्रोता नहीं बन पाया।

एक दूसरा कारण और भी रहा। उनमें अपनी बात को बहुत विस्तार देने की, लम्बे समय तक कहने की जबर्दस्त पकड़ और क्षमता है मगर वे मूर्तिवत् होकर अपनी बात इस ढंग से कहते पाये जायेंगे जैसे कोई प्रतिमा हो और उसके आगे माईक लगाकर पीछे टेप शुरू कर दी हो। कोई हाव-भाव, हलन-चलन और अभिव्यक्ति वे नहीं छोड़ेंगे, ऐसी स्थिति में श्रोताओं की मनस्थिति का अन्दाजा लगाया जा सकता है।

जैनेन्द्रजी को सुनकर मैं कई बार सोचता रह जाता हूं कि उन्हें अपने को इतना संयमित करने और सिकोड़ने की क्यों आवश्यकता पड़ती है? बोलते समय ही नहीं, चलते, बैठते, बातचीत करते और यहां तक कि भोजन करते वक्त भी वे ऐसे ही बने रहते हैं जैसे कोई सांचा ढला हुआ हो। जैनेन्द्रजी जैन हैं। जैनधर्म कहीं न कहीं उन्हें इस रूप में संस्कारित किये हो तो कोई आश्चर्य नहीं।

प्रेमचन्द जन्म शताब्दी समारोह के सिलसिले में श्रमजीवी कॉलेज ने जैनेन्द्रजी को एक विशेष व्याख्यान हेतु उदयपुर आमंत्रित किया था। यह 22 अप्रेल 1980 का दिन था। मैं तब 'पीछोला' नाम से एक पाक्षिक पत्र निकालता था। मेरे मित्र डॉ. विश्वम्भर व्यास इसके सलाहकार सम्पादक थे। जैनेन्द्रजी के आने का पता हमें था ही अत: हमने जैनेन्द्रजी से मिलकर पीछोला के लिए एक भेंटवार्ता लेने का तय किया और दिन को ग्यारह बजे व्यासजी को भारतीय लोककला मण्डल आने को कह दिया।

इधर संयोग यह रहा कि जैनेन्द्रजी ने कला मण्डल देखने की इच्छा व्यक्त की। मुझे विद्यापीठ से फोन से सूचना मिली कि जैनेन्द्रजी के लिए कला मण्डल आने का कौनसा समय ठीक रहेगा। वे संग्रहालय देखना चाहेंगे। मैंने वही समय दे दिया जो डॉ. व्यास को दे रखा था। ठीक ग्यारह बजे जैनेन्द्रजी कला मण्डल आ गये। डॉ. व्यास भी आ गये। जैनेन्द्रजी को लगभग पौन घण्टे तक कला मण्डल का संग्रहालय और उसके विभिन्न विभागों द्वारा संचालित विविध गतिविधियों का अवलोकन कराया। वे बड़े प्रसन्न हुए और यह भी कहा कि देवीलाल सामरजी से कई बार मिलना हुआ। सुना भी कि वे कला मण्डल चलाते हैं पर मुझे यह ज्ञात नहीं था कि सामरजी की ऐसी रचना होगी। वस्तुत: उन्होंने बहुत बड़ा अद्‌भुत कार्य किया और देश को एक स्थायी देन दी है।

इसी बीच मैंने और डॉ. व्यास ने पीछोला प्रकाशन की सूचना उन्हें दी और यह भी कहा कि हम अधिक नहीं तो भी पांच-दस मिनिट आपसे कुछ बातचीत करना चाहेंगे। उन्होंने हां भर ली। हम निश्चिंत हो गये। कला मण्डल से निवृत्त होकर जैनेन्द्रजी विद्यापीठ की जीप में बैठे। हम भी उनके साथ हो लिये। रास्ते में चेटक चौराहे पर हमने उनसे निवेदन किया कि यदि आप ठीक समझें तो पास ही स्टूडियो है, एक फोटू आपके साथ खींचवाना चाहेंगे। जैनेन्द्रजी ने बड़े सहज भाव से इशारा दे दिया। हमने विजय स्टूडियो में जैनेन्द्रजी के साथ फोटू खींचवा लिया और श्रमजीवी कॉलेज चले गये।

डॉ. विश्वंभर व्यास, जैनेन्द्रजी एवं डॉ. महेंद्र भानावत

यहां जनार्दनराय नागर (जन्नुभाई) जैनेन्द्रजी की प्रतीक्षा कर रहे थे। भोजन का समय भी हुआ जा रहा था। जैनेन्द्रजी जीप में बैठे और जन्नुभाई भी बैठने को ही थे कि मेरा हाथ पकड़ कहा कि चलो बैठो, घर चलें। वहां भोजन भी हो जाएगा और रही सही कुछ बातचीत भी हो जायेगी। मैं संकोच करना चाहता था पर मुझे समय ही नहीं मिला। यह तो हम सोच ही रहे थे कि अभी समय मिल गया सो मिल गया, बाद में तो कुछ होने वाला नहीं है फलस्वरूप हम भी जीप में बैठ गये और नागरजी के घर अमल का कांटा स्थित 'शिवकृपा निवास' पहुंच गये।

वहां जाते ही भोजन तैयार था। न चाहते हुए भी शर्माशर्मी में हमें भी जैनेन्द्रजी-जनार्दनजी के साथ भोजन करना पड़ा। उस समय पूरे भोजन में बारी-बारी से सब्जी, चटनी तक की प्रशंसा होती रही पर अति स्वादिष्ट बनी खीर का स्वाद तो दांतों से चम्मच को भी बार-बार खनखनी दिये जा रहा था। खीर की प्रशंसा में मैं भी बड़ी मिठास से हां किये देता पर भीतर तो मेरा मन उन महान क्षणों से उत्थापित हुआ जा रहा था कि जनार्दन और जैनेन्द्र साहित्य की वे दो बड़ी हस्तियां हैं जिन्हें पाकर अपने जीवन के अन्तिम दिनों में प्रेमचन्द तक निश्चिंत हो गये थे। आज उन दोनों का सान्निध्य पाकर मैं कितना धनधन हो गया हूं। ऐसे क्षण तो यही, ये ही हो सकते हैं। यही सोच मैंने अपने भीतर के मन को अपनी सम्पूर्णता के साथ खोल दिया जैसे कोई मगर अपना पूरा मुंह खोल किसी चट्टान पर ठाठे मारता मस्त हो जाता है। खीर का वह जायका और उन क्षणों का सुखानन्द आज भी मैं घूंट-घूंट गले में उतारता पाता हूं, जब-जब उस अवसर की याद संजोता हूं। भोजन के बाद हम लोग जन्नुभाई के आराम कक्ष में बैठ जाते हैं। जैनेन्द्रजी कुर्सी पर बैठे प्रारम्भ करवाते हैं- 'हां भाई, पूछो क्या पूछना चाहते हो?' हम प्रश्न आरम्भ करते हैं। वे सहज सयंत हो उत्तर देते हैं। बीच-बीच में जन्नुभाई भी बातचीत के समय बैठते-उठते समय यदाकदा अपनी उपस्थिति और हमारा सम्बल बनते दिखाई देते हैं।

प्रश्न : फ्रायड के मनोविश्लेषण की बात आपके उपन्यासों के सम्बन्ध में की जाती है। आप इस संबंध में क्या सोचते हैं?

उत्तर : सच तो यह है कि उपन्यास लिखते वक्त हमारे दिमाग में यह कभी नहीं आया कि इसमें फ्रायड आ रहा है अथवा और कोई। आलोचकों में खासतौर पर डॉ. देवराज उपाध्याय ने कहा कि इनमें 'गेस्टाल्ट' है। हमें उस वक्त यह भी पता नहीं था कि गेस्टाल्ट क्या है, कोई व्यक्ति अथवा प्रवृत्ति? आलोचक अक्सर अपनी ही बात हम पर आरोपित करते रहते हैं पर हमारे अवचेतन में भी कहीं कुछ ऐसा रहा है, हम नहीं कह सकते।

प्रश्न : आपने अपने जीवन में सर्वाधिक किन बातों से अपने को हतप्रभ किया?

उत्तर : सबसे पहले हम स्त्री से पराजित हुए हैं। इसके बाद परमात्मा से, फिर धन से।

प्रश्न : धन से?

उत्तर : हां, अब धन के सामने पराजित हैं। धन से ही सामाजिकता बनती और बिगाड़ती है। पैसों पर मैंने कई कहानियां लिखी हैं जैसे चालीस रूपया। अपरिग्रह का सवाल तो तभी उत्पन्न होगा, जब भराव होगा। इधर त्याग शब्द से मुझे वितृष्णा हो गई है।

प्रश्न : आपका सबसे अच्छा उपन्यास कौनसा है?

उत्तर : इसका जवाब हमसे कभी बना नहीं। हमने सोचा कि बार-बार जब लोग पूछते हैं तो हम इसका जवाब क्यों नहीं दे पाते हैं। आखिर बात क्या है? तब मैंने चिन्तन किया तो इसका जवाब निकल आया।

प्रश्न : क्या जवाब था?

उत्तर : यही कि मेरे पांच बच्चे हैं। इनमें से कौन ज्यादा प्यारा है तो लगा कि जब-जब जो बीमार पड़ जाता है तो वही सबसे प्यारा है। कहने का तात्पर्य यह है कि जिस उपन्यास की चर्चा सबसे कम हुई वही सबसे अच्छा उपन्यास होगा।

प्रश्न : प्रेमचन्दजी की देन को आप किस रूप में स्वीकार करते हैं?

उत्तर : प्रेमचन्दजी की देन इतनी विशाल है कि उसके प्रकाश में हम इस भ्रम में पड़ सकते हैं कि वे कोई अत्यन्त प्रभावशाली व्यक्ति रहे होंगे। प्रतिभाशालियों में इतनी बड़ी चमक-दमक होती है कि वह जितनी जल्दी प्रकाशित होती है उतनी ही जल्दी बुझ जाती है।

प्रश्न : तो फिर?

उत्तर : प्रेमचन्दजी ने सदैव विशिष्ट बनने से इन्कार किया। सामान्य में भी वे अति सामान्य थे। उन्होंने पाठक को चमत्कृत करने, अभिभूत करने या कि प्रभावित करने की दृष्टि से कुछ नहीं लिखा।

प्रश्न : तो फिर प्रेमचन्द के साहित्य को आप किस दृष्टि से मूल्यवान मानते हैं?

उत्तर : सब लोग साहित्य के माध्यम से अपनी महिमा एवं गरिमा पहुंचाना चाहते हैं। प्रेमचन्द ने ऐसा कुछ नहीं किया। उनके साहित्य में स्वच्छता है, पुष्टता है, स्वास्थ्य है पर चमक-दमक नहीं है। लोग समझें कि जो मूल्यवान है वह अहमता में से प्राप्त नहीं होता, सहजता में से होता है। जो अपने को शून्य बना देता है वह तो बहुत कुछ दे जाता है। प्रेमचन्द को उनकी सादगी, सज्जनता, सहृदयता और सामान्य बने रहने के व्रत ही ने महान बना दिया।

प्रश्न : पत्नी और प्रेयसी दोनों में क्या अब भी आप प्रेयसी को अनिवार्य मानते हैं?

उत्तर : बिल्कुल। मैं तो प्रेयसी को अनिवार्य मानता हूं। पत्नी से तो घर चलता है।

प्रश्न : प्रेम की सार्थकता किसमें है?

उत्तर : प्रेम एक ऐसी विवशता है कि उस ओर आदमी खींचता है। यह तो जीवन की कशिश है जो समाप्त नहीं होती। प्रेम की सार्थकता पत्नी से नहीं, प्रेयसी से होती है जिसके प्रति आदमी समर्पित हो जाना चाहता है।

प्रश्न : प्रेयसी क्या साहित्यकारों के लिए ही अनिवार्य है या सबके लिए ?

उत्तर: अरे भाई! मैं तो सबकी बात कर रहा हूं। मेरी दृष्टि में पति, पत्नी, प्रेमी और प्रेयसी चारों ही अनिवार्य हैं। यदि हम चारों को मान लेते हैं तो फिर कोई टूटन नहीं रहेगी।

प्रश्न : पर समाज इसे माने तब न।

उत्तर : समाज में इस पूरक को स्वीकार करने की तैयारी नहीं है तो छल रहता है। हम लाख छिपाने की कोशिश करें, प्रेम छिप नहीं सकता। प्रेम की महिमा ही यह है कि उससे संयम हारता है।

प्रश्न : इस ओर तो प्राय: पुरुष ही अधिक सक्रिय नजर आते हैं।

उत्तर : महिला को अपेक्षाकृत सुविधाएं कम हैं तो दावेदार अधिक हो जाते हैं। अत: प्रेम विवाह को स्वीकार करने के बाद भी प्रेमी-प्रेमिका के अस्तित्व को नकारा नहीं जा सकता। जो अनिवार्य है यदि स्त्री उसे स्वीकार नहीं करेगी तो उसका फल भोगेगी जो भोग रही है।

प्रश्न : यह जरूरी नहीं है कि प्रत्येक को प्रेयसी मिल जाये। फिर अनिवार्यता की बात का क्या अर्थ?

उत्तर : दरअसल, प्रेमी प्रेमिका तो प्रतीक है। प्रेयसी तो एक प्रकार की अप्सरा है जिसके पास शरीर है ही नहीं। वह तो आपकी आंखें हैं जो शरीर दे देती हैं। यदि प्रेयसी भाव समाप्त हो जायेगा तो फिर आप अप्राप्ति की ओर चलते रहेंगे।

शब्द रंजन

उदयपुर, गुरूवार 01 अक्टूबर 2020

सम्पादकीय

लोककलाकारों की सुध

भारत कई दृष्टियों से महान है। अपनी परम्पराओं की वृद्धि से पूरे विश्व में इसकी पहचान है तो यहां की संस्कृति के रखवारे कलाकारों के कारण जो सदियों से अनेक उतार-चढ़ाव के बावजूद गाने-बजाने-नाचने तथा विविध भांति लोकरंजन के माध्यमों के रखरखाव के लिए भी नामवरी लिए है।

आजादी के बाद एक नवीन दृष्टि से इन कलाकारों की ओर हमारा ध्यान गया। हमने उनकी सुध ली और यह पाया कि इनके पास जो समृद्ध धरोहर विरासत के रूप में संभली हुई है उसे संरक्षित समुन्नत तथा सुरम्य बनाना परम आवश्यक है।

इसके लिए सर्वाधिक पहल राजस्थान में भारतीय लोककला मण्डल के माध्यम से देवीलाल सामर ने की। सरकार की ओर से राजस्थान विकास विभाग ने सम्बल सहयोग देते इस विचार को मूर्त रूप देने हेतु सामरजी की प्रशंसा की और उदयपुर के पास बेदला राव के ठिकाने में लोक कलाकार प्रशिक्षण शिविर प्रारम्भ किया।

यह बात सन् 1958 की है जब पन्द्रह-पन्द्रह दिन के चार शिविर लगाकर तेहसीलदारों के माध्यम से उनके क्षेत्र में प्रदर्शनरत विविध विधाओं के लोक कलाकारों को खुला बुलावा देकर बेदला आने का न्योता दिया। यहां उनके आने-जाने, ठहरने तथा खाने-पीने की सारी व्यवस्था राजस्थान सरकार की ओर से नि:शुल्क की गई। डॉ. महेन्द्र भानावत को इस आयोजन का मुख्य संयोजक बनाया गया जो पूरे दो माह इन कलाकारों के साथ रहे।

सामरजी अपने मार्गदर्शन में प्रति रात्रि इन कलाकारों के प्रदर्शन रखते जिन्हें देखने आस-पास की जनता आधी रात तक रावले के विशाल चौगान में नित नये-नये कार्यक्रम देखकर अभिभूत होती फूली नहीं समाती। दिन को हम इन कलाकारों के साथ बैठकर उनकी कला-परम्पराओं, उनके घरानों, उनसे जुड़े रीति-रिवाजों, विशिष्ट यजमानों तथा आजीविका से जुड़े मसलों पर बातचीत कर खुला दरबार लगाते।

ऐसे करते हमें पूरे राजस्थान में प्रचलित प्रदर्शनकारी लोककलाओं के माध्यम से अन्य अंचलों से सम्बद्ध राज्यों में प्रचलित कला रूपों की खासी जानकारी मिल गई। इसी शिविर के अन्तिम दौर में नागौर जिले के जीजोट गांव का नाथू भाट का एक कठपुतली दल आया जो अमरसिंह राठौड़ का खेल करता था।

यह अन्तिम खेल था जिसमें हाथी, घोड़ों तथा ऊंटों पर सवार विविध ठिकानों के राजा-महाराजा-सरदार आकर राजदरबार की शोभा बढ़ाते हैं। नागौर के राजा अमरसिंह की उपस्थिति में नाना करतब दिखाते घोड़े नचाने वाले, पट्टेबाज, बहुरूपिये आदि अपने प्रदर्शनों से सबको लोटपोट कर देते हैं। द्वार पर डुगडुगी वाले सबके आकर्षण बने रहते हैं। ढोलकवाली महिला पुतलियों के आपसी संवाद तथा मधुर कण्ठी गीतों से खेल को सवाया शतगुणा बना देती है।

कलामण्डल ने अपने कलाकारों द्वारा लोकाधारित इन रूपों को नवीन परिवेश देकर पूरे देश और विदेश में अनेक प्रदर्शन दिये। कठपुतली नाटिका पर तो विश्व का सर्वोच्च पुरस्कार भी लिया जब रूमानिया में 1965 में अन्तर्राष्ट्रीय कठपुतली समारोह हुआ। सामरजी ने लोकधर्मी प्रदर्शनकारी कलाएं नाम से प्रामाणिक ग्रंथ लिखा और डॉ. भानावत ने भीलों में प्रचलित गवरी नृत्य पर पीएच. डी. और राजस्थान के प्रत्येक अंचल तथा अन्य प्रान्तों का भ्रमण कर 'भारतीय लोकनाट्य' नामक ग्रंथ का प्रणयन किया।

देश के सभी विश्वविद्यालयों में आज तो इन विधाओं पर अनेक छात्र शोधकर्म में लगे हुए हैं। राजस्थान सरकार ने सबसे पहले यहीं के खड़तालवादक सिद्दीक फिर अल्लाजिलाईबाई और श्रीलाल जोशी को पद्मश्री दिलाई। अनेक कलाकारों की विश्व में पहचान बनी।

समय के बदलाव से अब वह माहौल नहीं रहा। वे यजमान भी नहीं रहे तो वे कलाकार और उनकी कलाएं भी संरक्षित विहीन होती गई फिर भी राजस्थान सबसे अग्रणी तथा पहला प्रदेश है जहां इस क्षेत्र का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कार्य हुआ। पत्र-पत्रिकाएं निकलीं। संस्थाएं खुलीं और विद्वानों ने भी खूब लिखा।

नाथद्वारा के विश्वप्रसिद्ध श्रीनाथजी मन्दिर के विशाल कमल चौक में श्राद्ध पक्ष के अन्तिम दिन कृष्णलीलापरक विविध रंगी कागजों तथा स्वर्ण व रजत की चमकीली पन्नियों से सांझी का कोट सजाया गया। -फोटो : जगदीश सोनी

अजब भारत गजब कोरोना

-डॉ. वेदप्रताप वैदिक-

भारत की दुविधा भी गजब की है। एक तरफ रेलें, मेट्रो, हवाई जहाज, दफ्तर, बाजार और कल-कारखाने खुल रहे हैं और दूसरी तरफ कोरोना की महामारी बढ़ती चली जा रही है। खुद भारत महामारी से महत्तममारी की तरफ दौड़ रहा है।

इस दौड़ में उसने दुनिया के ज्यादातर देशों को मात कर दिया है। इसमें शक नहीं कि इस महामारी का मुकाबला करने के लिए भारत सरकार और प्रांतों की सरकारें जी-जान से जुटी हुई हैं। आशाजनक खबर यह है कि हमारे देश में कोरोना से मरनेवालों की संख्या प्रतिशत के हिसाब से बहुत कम है।

आत्म-विश्वास की अति और लापरवाही हमारे यहां भी कम नहीं है। इसीलिए भारत में भी कई बड़े-बड़े नेता, फिल्मी सितारे, डाक्टर और नर्सें भी कोरोना के जाल में फंस गए हैं। यह महामारी अब तो कस्बों और गांवों तक फैल गई है। अचानक तालांबदी की घोषणा के कारण शहर छोड़कर अपने गांवों की तरफ भागते हुए मजदूर इसे अपने साथ लेते गए। अब ज्यों-ज्यों जांच उन तक पहुंच रही है, मरीजों की संख्या बढ़ती चली जा रही है।

लेकिन संतोष का विषय है कि इलाज से ठीक होनेवालों की संख्या भी काफी अच्छी है। भारत में 100 लोगों को कोरोना होता है तो उनमें से 76-77 लोग रोज़ ठीक हो जाते हैं। असरदार टीके (वेक्सीन) की खोज तो जोरों से चल ही रही है, आयुष मंत्रालय और अन्य कई आयुर्वेदिक संस्थानों ने तरह-तरह के सस्ते और सुलभ क्वाथ (काढ़े) जारी किए हैं। होम्योपेथी के डॉक्टर भी चुप नहीं बैठे हैं। लाखों-करोड़ों लोग आसन, प्राणायाम और व्यायाम के जरिए भी कोरोना का प्रतिरोध कर रहे हैं। क्या यह कम संतोष का विषय है कि टीके के बिना ही हमारे डाक्टरों ने कोरोना की तात्कालिक काट कुछ हद तक निकाल रखी है।

कोरोना बढ़ रहा है लेकिन उसका डर घट रहा है। यदि ऐसा नहीं होता तो क्या लोग सड़कों, बाज़ारों, दफ्तरों, कारखानों, रेलों और बसों में दिखाई पड़ते? सबसे बड़ी चिंता का विषय यही है कि देश की अर्थ-व्यवस्था लड़खड़ा गई है। सकल घरेलू उत्पादों में लगभग 29 प्रतिशत की गिरावट आ गई है। लगभग दस करोड़ लोग बेरोजगार हो गए हैं। दो करोड़ लोगों की नौकरियां चली गई हैं। भारत सरकार ने वंचित वर्गों के लिए 'बड़ी-बड़ी राहतों' की घोषणाएं की हैं लेकिन वे ऊंट के मुंह में जीरे के समान ही हैं।

इस वक्त जरुरी है कि लोगों के हाथ में पैसा पहुंचे ताकि वे खरीददारी कर सकें। सरकार से भी ज्यादा समाज की जिम्मेदारी है। कई गुरुद्वारे, मंदिर, जैन-संस्थाएं, मस्जिदें, गिरजे, संघ और समाज-सेवी संस्थाएं उत्तम पहल कर रही हैं लेकिन राजनीतिक पार्टियों के 10-12 करोड़ सदस्य यदि दो-दो तीन-तीन परिवारों की जिम्मेदारी भी ले लें तो देश के करोड़ों गरीबों और वंचितों को महामारी की मार से बचाया जा सकता है। समझ में नहीं आता कि हमारा खबरतंत्र, खास तौर से हमारे टीवी चैनल महामारी से लड़ने की बजाय अपनी सारी शक्ति किसी एक व्यक्ति की हत्या या आत्महत्या की पहेली को सुलझाने या उलझाने में लगे हुए हैं।

श्रमणसंघीय सौभाग्य मुनि का देवलोकगमन

उदयपुर (विज्ञप्ति)। श्रमण संघीय महामंत्री सौभाग्य मुनि का 28 सितम्बर को 83 वर्ष की उम्र में निधन हो गया। नाथद्वारा में चातुर्मास कर रहे मुनिश्री विगत एक माह से अस्वस्थ थे। अंतिम संस्कार उनकी दीक्षा स्थली उदयपुर जिले के कड़िया गांव में किया गया। मुनिश्री के निधन का समाचार सुन मेवाड़ तथा दूर-सुदूर के श्रावकों में शोक की लहर फैल गई। उनके सहवृत्त मेवाड़ प्रवर्तक मदन मुनिजी नाथद्वारा में ही अस्वस्थ हैं।

डॉ. तुक्तक भानावत ने बताया कि शब्द रंजन कार्यालय में दूरभाष के जरिये डॉ. देव कोठारी, डॉ. महेन्द्र भानावत, डॉ. खटका राजस्थानी, डॉ. दिलीप धींग, प्रकाश नागोरी ने शोकाभिव्यक्ति करते कहा कि सौभाग्य मुनि ओजस्वी वक्ता, आशु रचनाकार, कुशल प्रबंधक तथा सुधारवादी विचारों के सुलझे हुए संघठक थे। उनके जैसे वे ही थे। पंचकुला से सलाहकार दिनेश मुनि, डॉ. द्वीपेन्द्र मुनि, डॉ. पुष्पेन्द्र मुनि और उमरड़ा से जैनेन्द्र मुनि ने अपने संदेश में कहा कि सौभाग्य मुनि प्रतिभा सम्पन्न विद्वान, धारदार वक्ता, सुकवि तथा सम्माननीय लेखक थे। उल्लेखनीय है कि सौभाग्य मुनि का जन्म 10 दिसंबर 1937 को चित्तौड़ जिले के आकोला में हुआ था। 12 वर्ष की अल्प आयु में उन्होंने अंबालालजी मा.सा. से दीक्षा ली। साहित्य के क्षेत्र में काफी रुचि होने से उन्हें 'कुमुद' की उपाधि मिली।

विदुषी नृत्यांगना डॉ. कपिला वात्स्यायन स्मृति शेष हुईं

उन्होंने कहा- ''उदयशंकर के साथ मेरा सम्पर्क छोटा ही रहा पर उनका कोई शिष्य ऐसा नहीं जिसके साथ मैंने कम से कम पांच या दस साल रियाज नहीं किया हो। इनमें शान्तिवर्धन, देवेन्द्र शंकर, शिराली, प्रभात गांगुली, उजरा, जोहरा सब सम्मिलित हैं।

नृत्य के क्षेत्र में उन्होंने ताल और संगीत की दो सीमायें तोड़ीं। नृत्य और संगीत की रचना में उनका सम्बन्ध बिलकुल और ढंग का था और यही उनकी देन भी है। उदयशंकर ने लम्बे समय से चली आ रही परम्परा में परिवर्तन करते साहित्य का स्वर से, स्वर का अभिनय से और साहित्यस्वर अभिनय ताल का जो सम्बन्ध था उसको तोड़ा।''

सामरजी ने कहा -''हमारे यहां प्रचलित नृत्य की मणिपुरी, कथकलि, कत्थक और भरतनाट्यम; उदयशंकर ने इन चारों का निचोड़ लेकर एक नई शैली को जन्म दिया। अपने कल्चर सेन्टर में उन्होंने हर विधा का निष्णात व्यक्ति रखा।''

स्वरूप व्यास ने कहा-''उदयशंकर ने जहां ताल और संगीत की सीमा तोड़ी वहीं लय और गति की सीमा जोड़ी। उनके द्वारा प्रणीत रिदम ऑफ लाइफ नामक नाट्य प्रयोग में यह भाव बड़े प्रभावी ढंग से उजागर हुआ है।''

आधुनिक कला, संस्कृति तथा प्राचीन विद्याओं की प्रख्यात महामनीषी डॉ. कपिला वात्स्यायन का 91 वर्ष की उम्र में 16 सितम्बर को निधन हो गया। लगा जैसे पूरी सदी का अखण्ड कला-सेतु ही ढह गया। भारतीय लोककला मण्डल में रहते मेरा कपिलाजी से खासा परिचय रहा। जब कला मण्डल ने 22 से 27 फरवरी 1978 में रजत जयंती महोत्सव मनाया तब कपिलाजी को भी आमंत्रित किया गया था।

इस दौरान 27 फरवरी को नृत्यकार उदयशंकर स्मृति व्याख्यानमाला का शुभारम्भ कर अखिल भारतीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। अध्यक्षता डॉ. नारायण मेनन ने की। कला मण्डल के संस्थापक देवीलाल सामर ने व्याख्यानमाला का शुभारम्भ करते उदयपुर में जन्मे उदयशंकर के साथ रहकर कल्पना फिल्म में भूमिका देने तथा उनके साथ में बिताये समय को याद करते बड़ी दिलचस्प जानकारी दी।

मुख्य वक्ता के रूप में डॉ. कपिलाजी ने उदयशंकर की नृत्य पद्धति और विशिष्ट देन का जिक्र करते कहा कि उदयशंकर के साथ तो मेरा सम्पर्क छोटा ही रहा पर उनका कोई शिष्य ऐसा नहीं जिसके साथ मैंने कम से कम पांच या दस साल रियाज नहीं किया हो। इनमें शान्तिवर्धन, देवेन्द्र शंकर, शिराली, प्रभात गांगुली, उजरा, जोहरा सब सम्मिलित हैं। मेरी शिक्षा उदयशंकर की शैली से भारतीय नृत्यशास्त्र की शैली पर जाने की हुई। उदयशंकर को जब विश्व की ख्याति मिली तो उन्हें भारतीय नृत्य के बारे में कुछ भी मालूम नहीं था पर उसके बाद उनकी दृष्टि खुली और तब तो वे उन लोगों में गये जिनको और स्तर पर आज हम ढूंढ़े जा रहे हैं। मेरी समझ में उनकी देन एक ऐसी देन है जो रवीन्द्रनाथ ठाकुर की देन है।

डॉ. कपिलाजी ने अपने व्याख्यान में उदयशंकर के नृत्य-टुकड़ों को अपनी विविध भंगिमा देते बताया कि नृत्य के क्षेत्र में उन्होंने ताल और संगीत की दो सीमायें तोड़ीं। शास्त्रीय शैली में संगीत प्रधान है और संगीत पर नृत्य होता है। संगीत नृत्य पर नहीं बांधा जा सकता। उन्होंने संगीत बाद में बांधा। नृत्य और संगीत की रचना में उनका सम्बन्ध बिलकुल और ढंग का था और यही उनकी देन भी है।

उदयशंकर ने लम्बे समय से चली आ रही परम्परा में परिवर्तन करते साहित्य का स्वर से, स्वर का अभिनय से और साहित्य स्वर अभिनय ताल का जो सम्बन्ध था उसको तोड़ा। इसे तोड़ने में सबसे बड़ा काम शान्तिवर्धन ने अपनी रामायण में किया।

सामरजी ने कहा कि हमारे यहां प्रचलित नृत्य की मणिपुरी, कथकलि, कत्थक और भरतनाट्यम; उदयशंकर ने इन चारों का निचोड़ लेकर एक नई शैली को जन्म दिया। अपने कल्चर सेन्टर में उन्होंने हर विधा का निष्णात व्यक्ति रखा। कलकत्ता में जब उन्होंने अपने नृत्य का प्रदर्शन दिया तो बंगालियों ने उनकी आलोचना की। अकेले रवीन्द्रनाथ टैगोर ही थे जिन्होंने कहा कि तुम जो कुछ कर रहे हो, अच्छा कर रहे हो परन्तु इसमें भारतीय संस्कृति का पुट नहीं है अत: सारे देश का भ्रमण करो। बड़े-बड़े गुरुओं के चरणों में बैठकर अध्ययन करो। उन्होंने यही किया।

भारतीय लोककला मंडल में आयोजित प्रथम उदयशंकर स्मृति व्याख्यानमाला में मुख्य वक्ता के रूप में प्रस्तुति देती डॉ. कपिला वात्स्यायन। पास में बैठे हैं डॉ. महेन्द्र भानावत तथा देवीलाल सामर।

उदयशंकर के शिष्यों के साथ नृत्यनाटिकाओं के लेखन से जुड़े फिल्म्स डिवीजन बम्बई के प्रख्यात वाणीकार स्वरूप व्यास ने अपने संस्मरणों में कहा कि बाद के नाट्य प्रयोगों में उदयशंकर की शैली की छाप स्पष्टत: देखने को मिलती है। शांतिवर्धन द्वारा दिग्दर्शित डिसकवरी ऑफ इंडिया और रामायण में तो ऐसा लगता है जैसे उदयशंकर ही मूर्तिवंत जीवंत हो गए हैं। उदयशंकर ने जहां ताल और संगीत की सीमा तोड़ी वहीं लय और गति की सीमा जोड़ी। उनके द्वारा प्रणीत रिदम ऑफ लाइफ नामक नाट्य प्रयोग में यह भाव बड़े प्रभावी ढंग से उजागर हुआ है।

मेरा सौभाग्य ही रहा कि इस संगोष्ठी और पूरे रजत जयंती समारोह का मैं संयोजक रहा। इसी समारोह में पुस्तक लोकार्पण तथा स्मारिका 'रजन्तिका' के साथ ही मेरे द्वारा लिखित चार पुस्तकों - राजस्थान की गणगौर, राजस्थान की संझ्या, राजस्थान के थापे तथा राजस्थान के मांडणें का लोकार्पण गांधी शांति प्रतिष्ठान के अध्यक्ष तथा लोककला मण्डल के प्रथम अध्यक्ष रहे श्री आर. आर. दिवाकर द्वारा किया गया।

उदयशंकर

इसके एक वर्ष बाद ही मेरे द्वारा 'संस्कृति के रंग' नामक पुस्तक तैयार की गई तो इसकी भूमिका के लिए डॉ. कपिलाजी से कहा गया। तेरह निबंधों की इस पुस्तक के लिए तब उन्होंने अपनी संक्षिप्त भूमिका लिख भेजी जिसका प्रकाशन नवंबर 1979 में हुआ। उन्होंने लिखा- ''राजस्थान की संस्कृति की अपनी अलग ही विशेषताएं रही हैं। ये विशेषताएं एक दिन में नहीं बनतीं। इनके पर्त के ऊपर पर्त बनने में सदियां लगती हैं। इन पर्तों पर नक्काशी का काम करती हैं यहां बसने वाली जातियों की रूचियां। संस्कृति को निखारती हैं वहां की परम्पराएं, इतिहास, जीवन में आने वाली समस्याएं, आपदायें, मन की उमंगें तथा हौंसले।

05 मार्च 1983 को राजस्थान विद्यापीठ के संस्थापक जनार्दनराय नागर द्वारा अपने श्रमजीवी महाविद्यालय में प्रख्यात साहित्यकार डॉ. अज्ञेय को आमंत्रित किया गया था। इनका पूरा नाम सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन था किन्तु ये अपने उपनाम 'अज्ञेय' से ही जाने गए। डॉ. कपिला वात्स्यायन ने इन्हीं से विवाह किया किंतु कुछ समय पश्चात दोनों में विच्छेद हो गया।
श्रमजीवी में व्याख्यानोपरांत अज्ञेय के साथ उदयपुर के साहित्यकारों में क्रमश: डॉ. पूनम दईया, डॉ. रामगोपाल शर्मा, अज्ञेय, डॉ. आलमशाह खान, पं. जनार्दनराय नागर, डॉ. महेन्द्र भानावत एवं डॉ. नवल किशोर। पीछे खड़ों में डॉ. पुरुषोत्तम छंगाणी, राजेन्द्र सक्सेना, डॉ. देवदत्त शर्मा, डॉ. देव कोठारी आदि दिखाई दे रहे हैं। **-फोटो : डॉ. महेंद्र भानावत के संग्रह से**

राजस्थान का इतिहास जनजीवन के गुजरने के मार्गों तथा घाटियों की भरपूर झलक प्रस्तुत करता है। यहां की संस्कृति में कला, साहित्य, पोशाक, रंग, नृत्य, संगीत आदि विविध पक्षों के पीछे इतिहास के साथ-साथ सामाजिक एवं राजनैतिक व्यवस्थाएं बोलती हैं। इन सभी का लोकजीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा। ये ही प्रभाव यहां की संस्कृति को रंगते गये और अपने रंगों की छाप छोड़ते गये।

'संस्कृति के रंग' पुस्तक में ऐसे ही रंग समाये हुए हैं। विद्वान लेखक डॉ. भानावत ने संस्कृति के अनेक रूपों में कुछ रूप बानगियों के तौर पर रखे हैं। लोकनृत्यों में तेराताली एक अनोखा प्रदर्शन है। नट-नटनी के खेलों की परम्परा बहुत पुरानी है।

पगड़ियों पर काफी प्रकाश डाला गया है। पगड़ी में तिजोरी याद दिलाती है नादिरशाह की भारत के बादशाह के साथ पगड़ी बदलने की जिसमें बादशाह ने उस हीरे को छिपा रखा था जिसे हड़पने की नादिरशाह की नीयत थी। बड़ल्या हींदवा, मोलेला की मूर्तियां, तोरण आदि सचमुच संस्कृति के निराले रंग हैं जिनकी अपनी अलग छटा और रूप है। ये रंग इतने व्यापक, गहरे और अनगिनत हैं कि इन पर काम करने के लिए अनेक संस्थाओं तथा इनकी गहराई में उतरने वाले विद्वानों की आवश्यकता है। इसके लिए बड़े साधन चाहियें। पर्याप्त सुविधाएं हों तभी यह कार्य हो सकता है।

'संस्कृति के रंग' इस वाटिका का नया पुष्प है। श्री महेन्द्र भानावत इस क्षेत्र के जाने माने विद्वान् तथा शोधकर्त्ता हैं। वर्षों से उन्होंने अपने को इस कार्य में अर्पण कर रखा है।''

डॉ. कपिलाजी से इसके बाद भी मेरी भेंट होती रही। दिल्ली के इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने जब अखिल भारतीय संगोष्ठी आयोजित की तब उसके समापन की अध्यक्षता कपिलाजी ने की थी। इसमें मैंने उन्हें अपने द्वारा लिखी एक दर्जन पुस्तकें भी भेंट कीं।

उदयपुर में सांस्कृतिक स्त्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र (सीसीईआरटी) का शाखा कार्यालय खोलने में भी कपिलाजी का अहम योगदान रहा। उनके कुछ पत्र भी मेरे पास सुरक्षित हैं। उनके निधन से राष्ट्र के कला-संस्कृति क्षेत्र में उनके योगदान की अपूरणीय क्षति शायद ही पूरी हो सकेगी। शब्द रंजन की उन्हें हार्दिक शोकांजलि।

- प्रस्तुति : डॉ. महेन्द्र भानावत

प्रीमियम एसयूवी ग्लॉस्टर लॉन्च

उदयपुर (विज्ञप्ति)। एमजी मोटर इंडिया ने भारत की पहली ऑटोनॉमस (लेवल 1) प्रीमियम एसयूवी एमजी ग्लॉस्टर पेश की है। कंपनी का भारत में यह तीसरा प्रोडक्ट है। इससे पहले इंटरनेट कार हेक्टर और इंटरनेट इलेक्ट्रिक एसयूवी जेडएस ईवी लॉन्च की थी।

एमजी मोटर इंडिया के प्रेसिडेंट और एमडी राजीव चाबा ने कहा कि एमजी ग्लॉस्टर कई फर्स्ट-इन-सेग्मेंट फीचर एडवांस्ड ड्राइवर असिस्टेंस सिस्टम के साथ आएगी। ग्लॉस्टर में एडॉप्टिव क्रूज कंट्रोल, ऑटोमैटिक इमरजेंसी ब्रेकिंग और फॉरवर्ड कोलिजन वार्निंग, लेन डिपार्चर वार्निंग, ब्लाइंड स्पॉट डिटेक्शन के साथ ऑटोमेटिक पार्किंग असिस्ट शामिल हैं। यह 'स्नो ', 'मड', 'सैंड', 'इको', 'स्पोर्ट', 'नॉर्मल' और 'रॉक' सात अलग-अलग ड्राइव मोड्स के साथ आता है। एसयूवी को 1,00,000 रुपए में बुक किया जा सकता है।

फेस्टिव ट्रीट्स 1000+ऑफर के साथ लॉन्च

उदयपुर (विज्ञप्ति)। एचडीएफसी बैंक ने अपने वार्षिक वित्तीय सेवाएं धमाका फेस्टिव ट्रीट्स को लॉन्च किया। फेस्टिव ट्रीट्स में ग्राहको को सभी बैंकिंग उत्पादों पर ऋण से लेकर बैंक खातों तक, प्रमुख ब्रांड्स और कंपनियों से 1000 से अधिक ऑफर और 2,000 से अधिक हाइपर लोकल ऑफर्स प्रदान किये जायेंगे। इस राष्ट्रीय अभियान को पराग राव, कंट्री हेड, पेमेंट बिज़नेस, मर्चेंट एक्वायरिंग सर्विसेज एंड मार्केटिंग, एचडीएफसी बैंक द्वारा डिजिटली लॉन्च किया गया। इस अवसर पर प्रबंध निदेशक आदित्य पुरी ने अपनी विशिष्ट उपस्थिति दर्ज करवाई। बैंक को उम्मीद है कि त्योहारों के मौके पर मोबाइल, कंज्यूमर ड्यूरेबल और इलेक्ट्रॉनिक्स कैटेगरीज में गारमेंट्स, ज्वैलरी और डाइनिंग-इन आदि में काफी अच्छा प्रदर्शन होगा।

सहारा मामले में नेटफ्लिक्स को राहत नहीं

उदयपुर (विज्ञप्ति)। माननीय पटना उच्च न्यायालय ने माननीय सिविल जज, अररिया, द्वारा पारित किये गये आदेश में हस्तक्षेप करने से मना कर दिया है। नेटफ्लिक्स ने सिविल न्यायाधीश, अररिया, द्वारा पारित 28-08-2020 इजक्शन आदेश को चुनौती देते हुए यह अपील दर्ज करायी थी जो विवादास्पद डाक्युमेंट्री सीरीज 'बैड ब्वाय बिलियनेयस: इंडिया' मामले से संबन्धित है। आदेश में सिविल न्यायालय ने सहारा इंडिया की शिकायत पर नेटफ्लिक्स और इसके निर्माता, निर्देशक कर्मचारियों व सहयोगियों पर यह रोक लगा दी थी कि, वे 'बैड ब्वाय बिलियनेयस: इंडिया' को किसी भी प्रकार से जनता में रिलीज़, प्रदर्शित, मंचित अथवा प्रेषित न करें, जहाँ तक इसका संबन्ध सहारा व सुब्रतराय सहारा से है।

वीडियो केवाईसी सुविधा लॉन्च

उदयपुर (विज्ञप्ति)। एचडीएफसी बैंक ने वीडियो केवाईसी सेवा लॉन्च की। पायलट प्रोजेक्ट सफलतापूर्वक पूरा हो जाने के बाद एचडीएफसी बैंक ने अनुमति-आधारित वीडियो केवाईसी सुविधा स्थापित कर दी। यह सुविधा सतर्क व सुरक्षित वातावरण में खाता खुलवाने की प्रक्रिया के दौरान ग्राहक की पहचान सुनिश्चित करने की वैकल्पिक विधि प्रदान करेगी। बैंक में ग्रुप हेड-रिटेल ब्रांच बैंकिंग अरविंद वोहरा ने कहा कि वीडियो केवाईसी की सेवा एक एजाईल पॉड्स (चुस्त समूह) का परिणाम है, जिसमें ब्रांच बैंकिंग, डिजिटल बैंकिंग एवं रिटेल एस्सेट की टीमें मिलकर काम करेंगी। बैंक में ग्राहकों के लिए नए उत्पादों व सेवाओं के लिए अनेक एजाईल पॉड्स काम कर रहे हैं।

मायटीम कार्ड लांच

उदयपुर (विज्ञप्ति)। कोटक महिन्द्रा बैंक (कोटक) ने राजस्थान रॉयल्स का ऑफिशियल पार्टनर होने की घोषणा की और मायटीम कार्ड लांच किए।

कोटक महिन्द्रा बैंक लि. के पुनीत कपूर ने कहा कि हम राजस्थान रॉयल्स के साथ भागीदारी पर खुश हैं। यह डेबिट व क्रेडिट कार्डों की विशेष तौर पर डिज़ाइन की गई रेंज है। इस सीज़न भारत के पसंदीदा खेल के आयोजन के साथ ही प्रशसंकों के पास खुश होने का एक और कारण भी है, वे अपनी पसंदीदा टीम राजस्थान रॉयल्स की थीम पर डिज़ाइन किए गए विशेष डेबिट और/या क्रेडिट कार्ड के स्वामी बन सकते हैं। डेबिट व क्रेडिट कार्डों की कोटक क्रिकेट ऐडिशन रेंज में राजस्थान रॉयल्स के खिलाड़ियों, लोगो और वाटरमार्क के चित्र हैं तथा टीम का आधिकारिक रंग शामिल है। इस तरह से ये कार्ड राजस्थान रॉयल्स के प्रशंसकों के लिए ऐसी चीज़ बन जाते हैं जो उनके पास होनी ही चाहिए।

कोलगेट 6 टीमों का पार्टनर

उदयपुर (विज्ञप्ति)। देश में ओरल केयर में मार्केट लीडर, कोलगेट पामोलिव (इंडिया) लि. ने भारत को स्माईलिंग रखने के अपने निरंतर प्रयास में ड्रीम11 इंडियन प्रीमियर लीग 2020 में 6 टीमों के साथ ऑफिशियल स्माईल पार्टनर के रूप में सहयोग किया है। इन टीमों में दिल्ली कैपिटल्स, किंग्स11 पंजाब, कोलकाता नाईट राईडर्स, मुंबई इंडियंस, राजस्थान रॉयल्स एवं सनराईज़र्स हैदराबाद शामिल हैं।

रियायती दरों पर हृदय की जांच

उदयपुर (विज्ञप्ति)। पारस जे. के. हॉस्पिटल में विश्व हृदय दिवस के उपलक्ष्य में हृदय रोगों की जांच रियायती दरों पर की जायेगी। यह सुविधा 20 अक्टूबर 2020 तक मान्य रहेगी।

पारस जे. के. हॉस्पिटल के फेसिलिटी डायरेक्टर विश्वजीत कुमार ने बताया कि हम उदयपुर शहर एवं गांवों में बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने के लिए कटिबद्ध हैं। इसके तहत विश्व हृदय दिवस के उपलक्ष्य में उदयपुर व आसपास के आमजन को सुविधा व उच्चस्तरीय स्वास्थ्य सेवायें प्रदान करने के लिए 21 सितम्बर से 20 अक्टूबर तक हृदय की जांच व ऑपरेशन रियायती दरों पर उपलब्ध करवाने की सेवा शुरू की है जिसमें हृदय की जांच, एंजियोग्राफी, एजिंयोप्लास्टी, बांयपास सर्जरी व वाल्व रिप्लेसमेंट शामिल हैं।

दरों में वृद्धि

उदयपुर (विज्ञप्ति)। डीएचएल एक्सप्रेस ने 1 जनवरी, 2021 से कीमतों में बढ़ोतरी की घोषणा की है जिससे शिपमेंट का मूल्य 6.9 प्रतिशत बढ़ जायेगा। इसके अलावा जरूरत से ज्यादा वजन वाले शिपमेंट्स और नॉन-स्टैकेबल पैलेट्स के लिये सरचार्ज को प्रति पीस 7,250 रूपये और प्रति पैलेट 15,000 रूपये पर एडजस्ट किया जायेगा।

कंट्री मैनेजर आर. एस. सुब्रमण्यिन ने कहा कि डीएचएल एक्सप्रेस द्वारा वार्षिक आधार पर कीमतों को एडजस्ट किया जाता है, जिसमें मुद्रास्फीति और मुद्रा के उतार-चढ़ाव को भी ध्यान में रखा जाता है। डीएचएल 220 से अधिक देशों में सेवायें देता है और इन सभी देशों एवं क्षेत्रों में राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय प्राधिकारियों द्वारा नियमित आधार पर इन उपायों को अपडेट किया जाता है। स्थानीय स्थितियों के आधार पर, मूल्य व्यवस्था अलग-अलग देशों में भिन्न-भिन्न हो सकती है।

एमवे इंडिया ने राष्ट्रीय पोषण सप्ताह मनाया

उदयपुर (विज्ञप्ति)। स्वस्थ रहने के लिए पोषण के महत्व को उजागर करने के प्रयास में देश की अग्रणी एफएमसीजी डायरेक्ट सेलिंग कंपनी एमवे इंडिया ने राष्ट्रीय पोषण सप्ताह मनाया। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की हाल ही में राष्ट्रीय पोषण अभियान के तहत सितम्बर को पोषण माह के रूप में मनाने और इसे जन आंदोलन में परिवर्तित करने की घोषणा के अनुरूप थे।

इसका उद्देश्य स्वस्थ जीवन को बढ़ावा दे संतुलित पोषण सेवन को प्रोत्साहित करना है, जिससे कि लोगों के समग्र कल्याण को सुनिश्चित किया जा सके। एमवे इंडिया के चीफ मार्केटिंग ऑफिसर अजय खन्ना ने कहा कि हम सितम्बर को पोषण माह के रूप में भी मना रहे हैं और साथ ही 'कुक फॉर ए कॉज' नामक महीने भर चलने वाली एक अनूठी पहल भी शुरु की है।

श्रीराम सुपर 111 गेहूँ बीज से उत्पादकता बढ़ी

उदयपुर (विज्ञप्ति)। डीसीएम श्रीराम लि. की युनिट श्रीराम फार्म सोल्यूशन्स की ओर से पेश किए गए श्रीराम सुपर 111 सीड से राजस्थान के किसानों की गेंहू उत्पादकता बढ़ी है।

श्रीराम फार्म सोल्यूशन्स ने फसल उत्पादकता बढ़ाने के लिए आधुनिक एवं अनुसंधान-उन्मुख प्रोडक्ट विकसित किए हैं। लॉन्च के बाद से ही श्रीराम सुपर 111 गेहूँ बीज किसानों में बेहद लोकप्रिय हो रहा है जिसे श्रीराम फ़र्टिलाइज़र्स एण्ड कैमिकल्स के गेहूँ वैज्ञानिकों ने तैयार किया है। बीज का दाना बड़ा और चमकदार होता है। इससे चारा भी ज़्यादा मिलता है, और चपाती अच्छी गुणवत्ता की होती है। इन्हीं विशेषताओं के चलते यह बीज राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश और गुजरात के किसानों की पहली पसंद बन गया है। भीलवाड़ा के भोलेनाथ योगी एवं टोंक के नरेन्द्र चौधरी ने अपने खेतों में इस बीज का उपयोग कर फसल में वृद्धि दर्ज की है।

त्वचा की देखभाल के समाधान पेश

उदयपुर (विज्ञप्ति)। एमवे इंडिया ने व्यक्तिगत त्वचा की देखभाल संबंधी समाधान आर्टिस्ट्री सिग्नेचर सिलेक्ट पर्सनलाइज्ड सीरम लॉन्च किया है। भारत के निर्विवाद नंबर वन प्रीमियम स्किनकेयर ब्रांड के तौर पर आर्टिस्ट्री के नए लॉन्च ने देश में त्वचा की देखभाल संबंधी वैयक्तिक वर्ग में प्रवेश किया है। एमवे इंडिया के सीईओ अंशु बुधराजा ने कहा कि वैयक्तिकीकरण आज स्किनकेयर में एक उभरती हुई प्रवृत्ति है, जिसमें एमवे त्वचा की देखभाल संबंधी उपभोक्ताओं की विशिष्ट और उभरती हुईं आवश्यकताओं को पूरा करने वाले अपने नवप्रवर्तनशील समाधानों के माध्यम से नेतृत्व कर रहा है। हम उपभोक्ता की पसंदों और उपभोग आदतों में एक महत्वपूर्ण बदलाव देख रहे हैं, विशेष रूप से सौंदर्य और त्वचा की देखभाल वाली श्रेणी में। रिपोर्टें बताती हैं कि भारत की एफएमसीजी मार्केट की बिक्री कोविड-19 से पहले वाली स्थिति में वापस आ गई हैं।

पीआईएमएस को मिली एनएबीएल की मान्यता

उदयपुर (विज्ञप्ति)। पेसिफिक इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (पीआईएमएस) हॉस्पिटल, उमरड़ा को नेशनल एक्रेडिटेशन बोर्ड फ़ॉर टेस्टिंग एंड कैलिब्रेशन लेबोरेट्रीज की मान्यता प्रदान की गई है। यह मान्यता आईएसओ-15189:2012 के अंतर्गत दी गई।

पीआईएमएस के चेयरमेन आशीष अग्रवाल ने बताया कि इस मान्यता हेतु एनएबीएल की टीम द्वारा बीएसएल-2 लैब का निरीक्षण किया गया। लैब द्वारा गुणवत्ता, क्षमता आदि निर्धारित मानदण्डों पर खरी उतरने पर एनएबीएल द्वारा मान्यता प्रदान की गईं । इस मान्यता के आधार पर जल्द ही पीआईएमएस हॉस्पिटल उमरड़ा में कोविड़-19 की जांच शुरू होगी जिससे उदयपुर सम्भाग में गुणवत्ता का दायरा बढ़ जाएगा एवं कोविड़ संक्रमित मरीजों की जांच व उपचार किया जा सकेगा। अभी यह मान्यता उदयपुर के कुछ ही अस्पतालों में उपलब्ध है।

शिल्पकारों की मदद कर प्रशिक्षण देंगे

उदयपुर (विज्ञप्ति)। कोरोना के डर से सहमे बाजार में शिल्पकारों को राहत देने के लिए जयपोर संस्थान द्वारा दस दिनों के लिए आर्टिजन डायरेक्ट कैंपेन शुरू किया गया। इसके तहत शिल्पकारों के उत्पादों को डिजिटल माध्यमों के जरिये ग्राहकों तक पहुंचाया जाएगा। जयपोर की ब्रांड हेड, रश्मि शुक्ला ने कहा कि आदित्य बिरला फैशन एंड रिटेल लिमिटेड के एक अंग जयपोर ने क्रिएटिव डिग्निटी के सहयोग से राजस्थान के 50 से अधिक शिल्पकारों द्वारा निर्मित वस्तुओं को जयपोरडॉटकॉम पर दिखाया जाएगा। इसके तहत ज़रदोजी साड़ियाँ, लाख के आभूषण, नक्काशीदार पत्थर के आभूषण, कीमती पत्थरों से बनी मूर्तियाँ, तारकशी बक्से तथा अन्य विशेष श्रेणी के उत्पाद बिक्री के लिए उपलब्ध होंगे।

संजयकुमार द्वारा ऑर्गेनिक अण्डों की खेती

-डॉ. तुक्तक भानावत-

कोरोना के चलते प्रदूषण और मिलावट रहित पोषक खानपान की ओर रूख करते हुए लोग ऑर्गेनिक सब्जियों के साथ-साथ ऑर्गेनिक अण्डों की खेती की ओर बढ़ रहे हैं। ऑर्गेनिक सब्जियों की पैदावार तो कई लोग अपने-अपने स्तर पर करने लगे हैं पर ऑर्गेनिक अण्डों की ओर पहलीबार संजयकुमार ने एक नई पहल शुरू की है जिसमें उन्हें अच्छी सफलता मिली है।

इसके लिए संजयकुमार ने बैंगलूरू की स्वर्णधारा तथा वनराजा नस्ल की मुर्गियां लाकर उदयपुर से 30 किलोमीटर दूर चोर बावड़ी में फार्म हाऊस प्रारम्भ किया। संजयकुमार ने बताया कि बैंगलूरू विश्वविद्यालय के प्रोफेसर विशेषज्ञ से मार्गदर्शन लिया गया और उन्हें उदयपुर भी आमंत्रित किया गया।

संजय मूलत: उत्तरप्रदेश के हैं। उनके अनुसार मुर्गियों के लिए एक खास तरह का फीड जामनगर से मंगवाते हैं। पीने के लिए आरओ वाटर देते हैं और सब्जियां भी पैदा करते हैं जो मुर्गियों के काम भी आती है। वे कद्दू को मुर्गियों के लिए पसंदीदा खाना बताते हैं। वर्तमान में उनके पास 500 के करीब मुर्गे-मुर्गियां हैं जिने प्रतिदिन 150 अण्डे प्राप्त हो जाते हैं। उदयपुर शहर में प्रति अण्डा 27 से 30 रूपये में उपलब्ध होता है। संजय यह सम्भावना तलाश रहे हैं कि ऑर्गेनिक अण्डे सस्ते दामों में कैसे उपलब्ध हो सकें।

युनाइटेड होटेलियर्स ऑफ उदयपुर का शपथ ग्रहण समारोह

उदयपुर (विज्ञप्ति)। कोरोना महामारी में होटल, रेस्टोरेंट सहित पूरी हॉस्पिटेलिटी इंडस्ट्री से जुड़े लोगों को एकजुट कर उनकी बेहतरी के लिए हर संभव प्रयास करने तथा व्यवसाय को नए आयाम देने के मकसद से बनाए गए युनाइटेड होटेलियर्स ऑफ उदयपुर संस्था का शपथ ग्रहण समारोह बेम्बू सा रिसोर्ट एंड स्पा में आयोजित किया गया। समारोह में संगठन के अध्यक्ष यूबी श्रीवास्तव, सचिव रूपम सरकार, उपाध्यक्ष आशीष छाबड़ा, ट्रेजरार उज्वल मेनारिया मौजूद थे।

यूबी श्रीवास्तव ने बताया कि इस संगठन का एकमात्र उद्देश्य सभी साथी होटल व्यवसायियों, रेस्तरां और उन सभी लोगों के साथ वर्तमान की अभूतपूर्व व्यावसायिक संकटकालीन परिस्थितियों के समय एक साथ खड़ा होना व उदयपुर के इस उद्योग की बेहतरी के लिए कार्य करना है।

रूपम सरकार ने बताया कि कोरोना महामारी के इस दौर में सबसे ज्यादा असर होटल इंडस्ट्री पर पड़ा है। उदयपुर में यह व्यवसाय पूरी तरह से देशी-विदेशी पर्यटकों पर निर्भर है। वर्तमान में युनाइटेड होटलियर्स के 18 होटल समूह सदस्य बन चुके हैं तथा यह प्रक्रिया जारी है।

मुख्यमंत्री द्वारा 1332 करोड़ रूपये की 68 परियोजनाओं का शिलान्यास एवं लोकार्पण

जयपुर (सुजस)। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने मुख्यमंत्री निवास से वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से 1331.96 करोड़ रूपये के 68 विकास कार्यों का ई-शिलान्यास एवं ई-लोकार्पण किया। मुख्यमंत्री ने जयपुर, अजमेर एवं उदयपुर संभाग में स्मार्ट सिटी मिशन, अमृत योजना, आरयूआईडीपी एवं नगरीय विकास विभाग के तहत कुल 1037.96 करोड़ रूपये की 47 परियोजनाओं का शिलान्यास तथा 294.44 करोड़ रूपये की 21 परियोजनाओं का लोकार्पण किया।

इस अवसर पर गहलोत ने कहा कि कोरोना महामारी के कारण आई चुनौतियों के बावजूद राज्य सरकार ने शहरी विकास के कार्यों की गति धीमी नहीं होने दी और अधूरे कार्यों को पूरे करने साथ-साथ नई परियोजनाएं भी शुरू की हैं। स्मार्ट सिटी के तहत हो रहे कार्यों से शहरी जीवन स्तर में सुधार आएगा और पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा। मुख्यमंत्री ने नेता जनप्रतिनिधियों का आह्वान किया कि कोरोना से लड़ाई में हर व्यक्ति आगे बढ़कर सहयोग करे। इस दौरान मुख्यमंत्री ने राजस्थान आवासन मण्डल की 'अपनी दुकान-अपना व्यवसाय' योजना के फोल्डर का विमोचन भी किया। इस योजना के तहत प्रदेश के 13 शहरों में व्यावसायिक भूखण्ड अथवा निर्मित दुकान खरीदने का अवसर मिलेगा।

नगरीय विकास एवं स्वायत्त शासन मंत्री शांति धारीवाल ने कहा कि स्मार्ट सिटी मिशन के तहत हो रहे जनोपयोगी कार्यों में जयपुर संभाग में 632.35 करोड़ रूपये की 10 परियोजनाओं का शिलान्यास तथा 245.40 करोड़ की 12 परियोजनाओं का लोकार्पण, अजमेर संभाग में 349.01 करोड़ रूपये की 26 परियोजनाओं का शिलान्यास तथा 43.43 करोड़ की 3 परियोजनाओं का लोकार्पण एवं उदयपुर संभाग में 56.16 करोड़ रूपये की 11 परियोजनाओं का शिलान्यास और 05.61 करोड़ की 6 परियोजनाओं का लोकार्पण हुआ है।

उद्योग मंत्री परसादीलाल मीणा, परिवहन मंत्री प्रतापसिंह खाचरियावास, शिक्षा राज्यमंत्री गोविंदसिंह डोटासरा, विधानसभा में मुख्य सचेतक डॉ. महेश जोशी ने राज्य सरकार द्वारा जनहित में कराए जा रहे विकास कार्यों एवं कोरोना संक्रमण के दौरान किए गए प्रबंधन की प्रशंसा की।

वीसी के दौरान नेता प्रतिपक्ष गुलाबचन्द कटारिया, जयपुर सांसद रामचरण बोहरा, अजमेर सांसद भागीरथ चौधरी, विधायक श्रीमती गंगादेवी, रफीक खान, अमीन कागजी, निर्मल कुमावत, नगर निगमों के मेयर, स्थानीय निकायों के सभापति एवं अध्यक्ष तथा कई अन्य जनप्रतिनिधि जुड़े रहे। इस अवसर पर मुख्य सचिव राजीव स्वरूप, प्रमुख शासन सचिव नगरीय विकास भास्कर ए सांवत, शासन सचिव स्थानीय निकाय भवानीसिंह देथा, जेडीसी गौरव गोयल, आयुक्त राजस्थान आवासन मण्डल पवन अरोड़ा, आरयूडीआईपी के परियोजना निदेशक कुमारपाल गौतम, तथा विभिन्न जिलों के कलेक्टर उपस्थित थे।

विद्यापीठ विवि में संगीत एकेडमी की स्थापना - प्रो. सारंगदेवोत

उदयपुर (विज्ञप्ति)। जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ डीम्ड टू बी विवि के कुलपति प्रो. एस.एस. सारंगदेवोत ने कहा कि संगीत के क्षेत्र में रूचि रखने वाले युवाओं के लिए संगीत एकेडमी की स्थापना की

जायेगी। उन्होंने कहा कि विद्यापीठ के संस्थापक जनुभाई ने प्रारंभिक काल में ही महाराणा कुंभा कला केन्द्र की स्थापना की थी। अवसर था ख्यातनाम गजल गायक, कोटा विवि के एसो. प्रोफेसर डॉ. रोशन भारती एवं पंडित विजयकुमार धांधड़ा को शॉल, पगड़ी, स्मृति चिन्ह से सम्मानित करने का।

समारोह में डॉ. हरीश शर्मा, डॉ. शिवांगी श्रीमाली, हितेश गन्धर्व, कृष्णकांत कुमावत, डॉ. चन्द्रेश छतलानी उपस्थित थे।

दुल दुल घोरी

-सतीश 'बब्बा'-

मेरी दीदी की शादी में, आई थी दुल दुल घोरी।
हरिया नाचे, गरीब नाचे, नाचे गाँव की छोरी।।
आगे मुखड़ा पीछे पूँछ, बीच में बैठा राजू छूँछ।
ताँसे की टाप पर नाचे, हाले मुँह कपड़े की पूँछ।।
हम सब दौड़े द्वारचार में, हाथी घोड़ा दुल दुल घोरी।
पड़ा छमाका, नहीं प्रदूषण, लो आई बैलों की जोरी।।
जीजा जी घोड़ी पर आए, पैदल आए सभी बराती।
तीन दिनों तक मौज में स्वागत करते रहे धराती।।

14,000 से अधिक किराना दुकानें फ्लिपकार्ट से जुड़ी

उदयपुर (विज्ञप्ति)। त्योहारी मौसम और बिग बिलियन डेज़ की तैयारियों के मद्देनज़र फ्लिपकार्ट ने किराना ऑनबोर्डिंग प्रोग्राम में और विस्तार कर उत्तर भारत के 14,000 से अधिक किराना स्टोर्स को इस पहल से जोड़ा है।

अमितेश झा, सीनियर वाइस-प्रेसीडेंट, ई-कॉर्ट एंड मार्केटप्लेस, फ्लिपकार्ट ने कहा कि यह विस्तार फ्लिपकार्ट द्वारा 50,000 से ज्यादा किराना स्टोर्स से जुड़ने के प्रोग्राम का हिस्सा है जिसका मकसद देशभर के लाखों ग्राहकों तक पर्सनलाइज़्ड ई-कॉमर्स अनुभव को पहुंचाने के साथ-साथ किराना मालिकों को डिजिटल अपस्किलिंग तथा अतिरिक्त आमदनी का लाभ दिलाना है। इसके लिए ऑनलाइन एप्लीकेशन फॉर्म की मदद ली गई ताकि उन्हें साथ लाने की प्रक्रिया कॉन्टैक्टलैस हो और किराना पार्टनर अपना विवरण तथा कागज़ात की प्रति सीधे अपलोड कर सके।

सैनी इंडिया ने डीलर नेटवर्क बढ़ाया

उदयपुर (विज्ञप्ति)। निर्माण उपकरण, भारी मशीनरी और नवीकरणीय ऊर्जा समाधानों की अग्रणी निर्माता कंपनी सैनी इंडिया ने जोधपुर में नए डीलर के रूप में अपनी उपस्थिति को और मजबूत किया है।

सैनी इंडिया के डायरेक्टर-सेल्स, मार्किटिंग एंड कस्टमर स्पोर्ट धीरज पांडा ने कहा कि जोधपुर में जसराज इंफ्रा विशेष रूप से सेल्स, आफ्टर सेल्स सर्विस, और सैनी एक्स्कवेटर के स्पेयर पार्ट्स प्रोडक्ट बिजनेस से संबंधित होगा। जसराज इंफ्रा जोधपुर, बीकानेर, जैसलमेर, बाड़मेर, पाली और जालौर के कुछ हिस्सों में सेवा प्रदान करेंगी। हम सैनी परिवार में एक नए डीलर का स्वागत करते हुए उत्साहित हैं। हमारे उत्पादों की बढ़ती मांग के साथ, डीलरशिप का विस्तार अप्रयुक्त बाजारों में प्रवेश करने और संभावित ग्राहकों का विश्वास हासिल करने का सबसे अचूक तरीका है।

कैसे-कैसे अजूबे विवाह (4)

अब तक आप भांति-भांति के अनूठे-अजूबे विवाहों के विभिन्न रूपों के बारे में पढ़ चुके हैं। यहां पढ़िये उनसे आगे। पाठकों के पास इस सम्बन्धी कोई जानकारी हो तो उसका स्वागत रहेगा।

(26) दूसरे को पति मानना :

अपने पति या पतियों से जब कोई स्त्री रूष्ट हो जाए तो उसे दूसरे व्यक्ति को पति स्वीकार करने का हक है। इस पद्धति को घर करना कहते हैं। नए पति को पुराने पति से कुछ आवश्यक आर्थिक हिसाब करना पड़ता है। नया पति अपने सम्बन्धियों की उपस्थिति में शिव की पूजा करता है जिसे स्थानीय भाषा में नुआला कहते हैं। अपने देवता का आशीर्वाद प्राप्त करने के बाद अपनी पत्नी बना लेता है पर जंगलों में बसे आदिवासियों में एक अलग प्रकार की प्रथा प्रचलित है।

कुछ उदाहरण तो ऐसे हैं जब स्त्रियों में पांच-छह से अधिक घर करके बार-बार पति बदले हैं। इस प्रकार के विवाह में पहले पति के बच्चों की जिम्मेदारी भी नए पति पर ही आ जाती है। ये रीति रिवाज हिमाचल के सुदूर क्षेत्रों में आज भी हैं। तो भी आधुनिक शिक्षा के प्रसार से इन रीति रिवाजों में परिवर्तन हो रहा है।

(27) नकली युद्ध द्वारा विवाह :

उत्तरी गढ़वाल और कुमाऊ जिले की भोटियां जनजाति में लड़के और लड़की को अपने जीवन साथी के चयन में पूरी छूट होती है। लड़का और लड़की एक-दूसरे को स्वयं पसंद करते हैं। जब वे आपस में विवाह के लिए सहमत होते हैं तो लड़का अपने किसी साथी द्वारा एक छोटे चौकोर कपड़े में कुछ रूपये बांधकर लड़की के माता-पिता के पास भिजवाता है। लड़की के माता-पिता अपने रिश्तेदारों-शुभचिन्तकों के साथ सलाह-मशविरा करने के बाद अपनी मंजूरी दे देते हैं।

इसके बाद लड़का अपने पिता को यह सब बताता है और उसकी स्वीकृति मिलने पर किसी शुभ शगुन में बारात लेकर धूमधाम से जाता है और बिना कोई रस्म-संस्कार अदा किए लड़की को डोली में बैठाकर ले जाने को उद्धत होता है। उसके जाते समय लड़की पक्ष वाले अड़चन डालते हैं। इस अवसर पर नकली युद्ध किया जाता है। लड़की वाले इसमें अपनी नकली पराजय स्वीकार कर लेते हैं और डोली को जाने देते हैं।

अपने घर पहुंच कर लगभग डेढ़ हफ्ते बाद लड़का ससुराल वालों के पास किसी व्यक्ति को भेजता है। वह व्यक्ति उन्हें समझाता है कि जो होना था, वह तो हो चुका। अब आप नाराज क्यों हैं ? अपने बेटे को आशीर्वाद दें। इसके कुछ दिनों बाद लड़की के माता-पिता रिश्तेदारों को साथ लेकर लड़के के घर पहुंचते हैं। उनके आने पर विधिवत विवाह संस्कार का आयोजन होता है। नाच-गान किया जाता है। दावत दी जाती है। महीनों तक यह गहमागहमी रहती है। गांव का प्रत्येक परिवार अपनी तरफ से उन्हें दावत देता है। इतना होने पर लड़की वालों की विदाई के साथ विवाह को सम्पन्न हुआ मान लिया जाता है।

(28) मुर्गी -जीभ से विवाह शकुन :

देश के उत्तरी-पूर्वी सीमान्त प्रदेश में खोग जाति का निवास है। खोग जाति में लड़के-लड़कियों को अपना जीवन साथी चुनने की स्वतंत्रता नहीं होती। लड़के का पिता अपने बेटे के लिए वधू की खोज करता है। लड़की का रूप रंग देखकर व उसके चाल चलन के बारे में आवश्यक जानकारी प्राप्त करके वह उसके पिता के पास जाता है और उसे अपनी पुत्र वधू बनाने की इच्छा जाहिर करता है।

लड़की के पिता की स्वीकृति के पश्चात गांव के अन्य प्रतिष्ठित लोगों को बुलवा कर एक मुर्गी मंगाई जाती है। लड़की पक्ष वाले उस मुर्गी को मार कर उसकी जीभ निकालते हैं। मुर्गी की जीभ पर बने चिन्हों द्वारा पंडित जिसे पुगई कहते हैं, तय करता है कि यह विवाह शुभ होगा या अशुभ।

(29) वर्ष भर श्रमिकी करते विवाह :

नागालैण्ड की जाति में विवाह के लिए वर का बहादुर और लड़ाका होना एक अतिरिक्त योग्यता समझी जाती है। नागाओं में भी लड़का और लड़की स्वयं ही अपने लिए जीवन साथी खोजते एक-दूसरे को पसंद करने के बाद अपने-अपने माता-पिता से सलाह करते हैं। उनकी इजाजत मिल जाने के बाद लड़का कोई कीमती पशु लेकर लड़की वालों के यहां जाता है। पशु भेंट करने की यह रस्म सगाई मानी जाती है।

इस सगाई के बाद लड़का लड़की के घर में एक वर्ष तक रहता है। इस दौरान उसे घर-बाहर का सारा काम करना होता है। एक वर्ष की अवधि में खरा उतरने पर वर-वधू एक-दूसरे के हो जाते हैं। वर ससुराल वालों को नानाप्रकार के उपहार देकर वधू का मूल्य चुकाता है। सगे भाई-बहिन के साथ भी विवाह सम्बन्ध को ये बुरा नहीं मानते।

(30) अतोड़ विवाह :

बिहार, बंगाल व उड़ीसा के पलामू परगना, वीरभूम व कटक आदि जिलों की संथाल जाति में कन्या पक्ष वाले वर की तलाश करते हैं। योग्य वर मिल जाने पर किसी प्रौढ़ व्यक्ति को बिचौली बनाकर वर के घर भेजा जाता है। बिचौली वर पक्ष के सामने प्रस्ताव रखता है कि हम अपनी कन्या को आपके घर की बहू बनाना चाहते हैं।

उनकी रजामंदी के बाद लड़के-लड़की को हाट बाजार या अन्य किसी सुविधाजनक स्थान पर ले जाकर परस्पर मिलने के लिए छोड़ दिया जाता है। इसके बाद दोनों पक्षों के अभिभावक उनकी स्वीकृति मिल जाने पर विवाह की तैयारियां करते हैं। वर-वधू चिऊड़ा व मूढ़ी एक दूसरे पक्ष की ओर से दिया जाता है। चिऊड़ा व मूढ़ी देने की यह रस्म सगाई मानी जाती है।

संथालों की एक खास विशेषता यह है कि इनमें लड़की की 20 व लड़के की 25 वर्ष से कम उम्र में शादी बिल्कुल नहीं की जाती और न ही इनमें विवाह को कभी तोड़ा जाता है।

(31) मूल्य निर्धारण कर विवाह :

सुदूर उत्तर-पूर्व में बर्मा से लगे सीमावर्ती क्षेत्र की चकमा जाति में बेटे के लिए वधू की तलाश पिता करता है। पुत्र-वधू मिल जाने पर वह उसके पिता के पास जाता है और अपनी मंशा जाहिर करता है। लड़की का पिता गांव की पंचायत बुलाता है और उसमें सर्वसम्मति से लड़की की कीमत तय की जाती है।

इस कीमत का निर्धारण लड़की की सुरक्षा के लिए किया जाता है। इसका अभिप्राय होता है कि अगर लड़के के अत्याचारों से तंग आकर लड़की आत्महत्या करले अथवा ससुराल वाले किन्हीं कारणों से तंग आकर उसको मरवा डालें तो पंचायत में निश्चित की गई कीमत वर पक्ष द्वारा लड़की वालों को चुकानी होती है। आमतौर पर यह कीमत ज्यादा होती है जिसके कारण लड़की को ससुराल में प्यार से रखा जाता है।

विवाह के अवसर पर वर-वधू को लकड़ी की एक चौकी पर खूब सजाकर बैठाया जाता है। एक थाल में मिठाई, चावल, हल्दी आदि उनके सामने रख दी जाती है। इस मौके पर संबंधीगण सूत के रंगे हुए कच्चे धागे (कलाए) वर-वधू के चारों तरफ लपेटते हैं। इन कच्चे धागों का अभिप्राय होता है कि लड़का और लड़की दोनों परस्पर विवाह सूत्र में बंध गये हैं।

(32) बहुपुरुषी विवाह :

पश्चिमी उत्तरप्रदेश के पर्वतीय अंचलों की खस जनजाति में विवाह प्रथा इतनी विचित्र नहीं जितनी कि अन्य मान्यताएं। विवाह इनमें वर पक्ष द्वारा लड़की के चयन, बारात, मंत्रोच्चार, फेरों का सामान्य परिपाटी के अनुसार ही होता है। खस लोगों की विशेषता यह है कि इनमें एक ही स्त्री अनेक पुरुषों की पत्नी बनकर भी रह सकती है।

सामान्यतया इनमें एक भाई का विवाह हो जाने के बाद उसके अन्य भाई विवाह नहीं करते। एक ही स्त्री अन्य सभी भाइयों की भी पत्नी समझी जाती है और सभी भाइयों के प्रति पत्नी ही सम्पूर्ण भूमिका का निर्वाह करती है।

खस लोगों में यह द्रोपदी सम्बन्ध बहुत सहज माना जाता है। विश्वास है कि अगर एक घर के सभी भाई विवाह करलें तो थोड़ी ही जमीन पर अधिक लोगों के भरण पोषण का भार पड़ने से घर की अर्थव्यवस्था तहस-नहस हो जाएगी। खस लोगों में अन्तरजातीय विवाह भी होते हैं। यहां की स्त्रियां शराब पीने से लेकर नदी पार करने व पेड़ पर चढ़कर लकड़ियां काटने तक का हर काम करती हैं और पुरुषों का हाथ बंटाती हैं।

(33) नरमुंडधारी माला वाला वर विवाह :

बंगाल व असम के मैमनसिंह, ग्वालपाड़ा व कामरूप जिलों के गारों आदिवासी 'नरमुण्ड' के शिकार के रूप में जाने जाते हैं। इनमें कन्या पक्ष विवाह के लिए वर की खोज करता है। जिस लड़के के गले में पड़ी खोपड़ियों की माला में सबसे अधिक खोपड़ियां मिलती हैं और वह बहुत खूंखार नजर आता है, कन्या पक्ष उसी का चयन करता है। इस चयन के बाद वर पक्ष की स्वीकृति लेकर विवाह की तिथि तय होती है।

विवाह के अवसर पर लड़की को पतिव्रता धर्म का पालन करने की सीख दी जाती है। यदि कोई स्त्री ऐसा नहीं करती और उसके आचरण पर किसी को संदेह हो जाए तो उसके कानों की बालियां उतार ली जाती हैं। गारों की एक प्रमुख विशेषता है कि इनका पारिवारिक ढांचा मातृसत्तात्मक है। इनकी सम्पत्ति में लड़कियां उत्तराधिकारी होती हैं।

(34) घोटूल गृही विवाह :

विंध्य पर्वत के अंचल में रहनेवाली गोड जनजाति में विवाह के लिए घोटूल गृहों की व्यवस्था होती है। गोड लोग इसे जीवन की व्यावहारिक शिक्षा का केन्द्र मानते हैं।

घोटूल गृहों में अविवाहित लड़के-लड़कियां ही रात में रहते हैं। घोटूल में अपने बच्चों को न भेजना एक सामाजिक अपराध माना जाता है। घोटूल गृह का नेता एक अविवाहित युवक होता है जो वहां की सारी गतिविधियों को संचालित करता है।

(35) पेड़ पर चढ़ने वाली से विवाह :

बिहार के रांची व पलामू जिलों की मुडा तथा उरांव जनजातियों में शादी के लिए विचित्र शर्त होती है। इनमें उसी लड़की की शादी की जाती है जिसे पेड़ पर चढ़ना आता हो। यदि किसी लड़की को पेड़ पर चढ़ना नहीं आता तो उससे शादी नहीं की जाती। यदि धोखे से शादी हो भी जाय तो पत्नी को त्याग दिया जाता है।

(36) भोज संकेती विवाह :

मध्य भारत की प्रसिद्ध आदिवासी जनजाति भीलों में विवाह भोज के समय विचित्र किस्म का संकेत दिया जाता है। भीलों में विवाह भोज के अवसर पर आने वाले लोग अपने साथ थोड़ी मात्रा में अनाज, घी, मिट्टी के बरतन आदि साथ लाते हैं।

जब भोज समाप्त हो जाता है तो परोसने वाला व्यक्ति सारी पंगत के सामने से खाली हाथ गुजर जाता है। इसका अभिप्राय होता है कि भोजन समाप्त हो गया है। इस संकेत को समझ कर सब लोग उठ जाते हैं।

-हस्तांकन से साभार

क्रमश :

-शब्द रंजन टीम

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।